

★
★★

★★

सितारे

★★

[हिन्दुस्तानी पद्योंका सुन्दर चुनाव]

★
★★

★
★★

मेरे लिये तो आज ही वह वक्त है, जब मुझे मेहनतसे दोनों लिपियाँ या लिखावटें सीखनी चाहिये और ऐसी भाषा बोलनी चाहिये जो हिन्दी और अर्द्ध दोनोंकी ठीक मिलावट हो ।

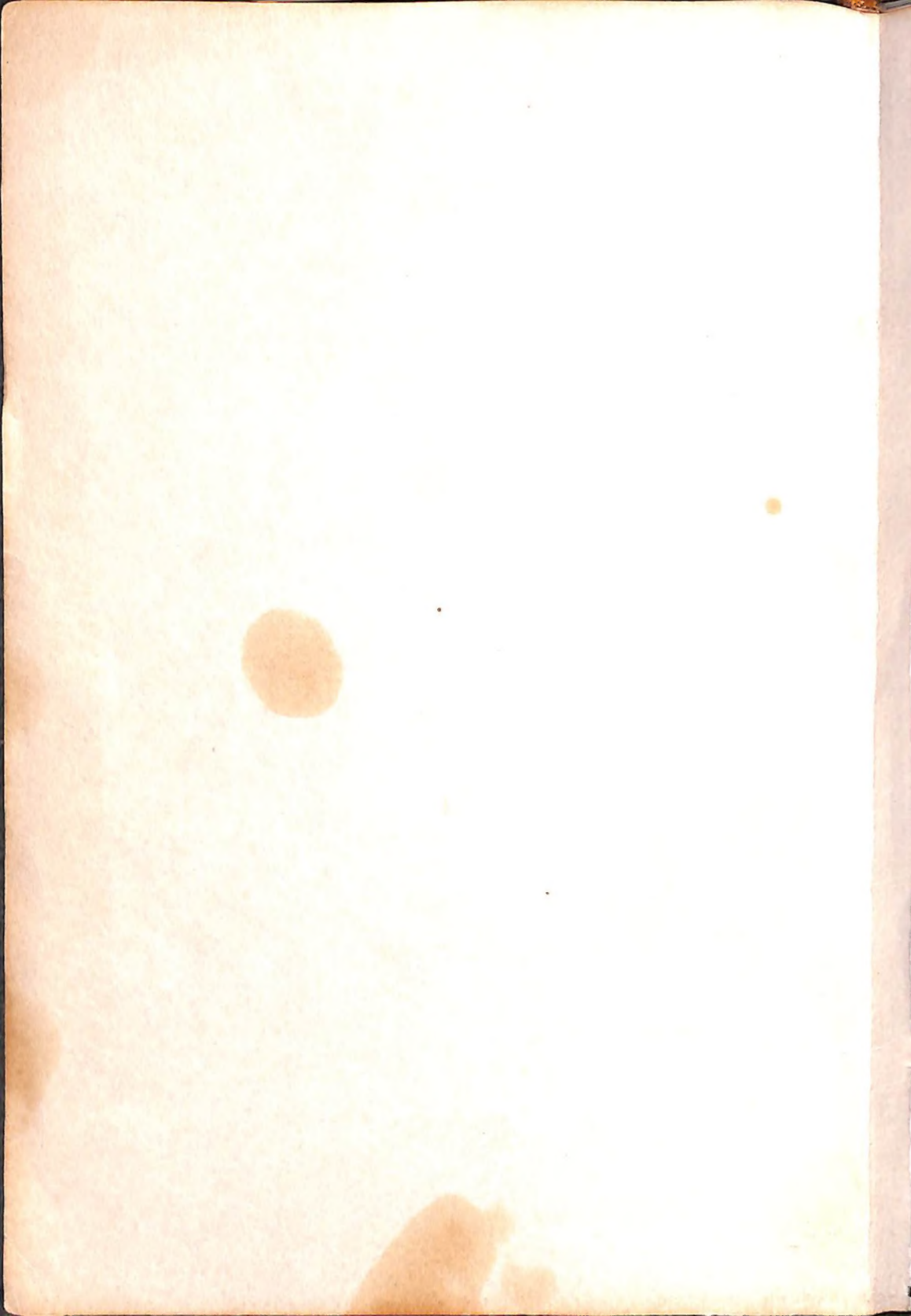
—महात्मा गांधी

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

तीसरी बार : १००००

अप्रैल, १९५२

दाम अेक रुपया



★
★★
★★ **सितारे** ★★
★

[हिन्दुस्तानी पद्योंका सुन्दर चुनाव]

★ ★ ★ ★

मेरे लिये तो आज ही वह वक्त है, जब मुझे मेहनतसे दोनों लिपियाँ या लिखावटें सीखनी चाहिये और ऐसी भाषा बोलनी चाहिये जो हिन्दी और उर्दू दोनोंकी ठीक मिलावट हो ।

—महात्मा गांधी

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

तीसरी बार : १००००

अप्रैल, १९५२

दाम अेक रुपया

निवेदन

करीब तीन साल पहले मैंने कुछ पाठ और कविताओंका संग्रह किया था। इस संग्रहकी कुछ कविताओंको लेकर श्री. श्रीमन्नारायण अग्रवाल और श्री. घनश्याम 'सीमाव' ने कुछ और कविताओं चुनीं और इस तरह यह किताब तैयार हुई।

हि. प्र. सभा, वर्धा की कार्य-समितिके ता. २३-३-४७ के ठहरावके मुताबिक यह किताब काबिल परीक्षाके लिये तैयार की गयी है और प्रकाशित की जाती है। जिन कवियोंकी कविताओं अनमें छपी हैं उनके हम दिलसे आभारी हैं।

अक्टूबर, १९४७

अमृतलाल नाणावटी

मंत्री,

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

★
★★

प्रकाशक :

मद्रक :

अमृतलाल ठाकोरदास नाणावटी

अ. ठा. नाणावटी

मंत्री : हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

हिन्दुस्तानी छापघर, वर्धा

विषय-सूची

पद्य	कवि	पन्ना
१. धोज	श्री. रामनरेश त्रिपाठी	१
२. बसो हर वक्त	,, सागर निज़ामी	३
३. प्यासी नदी	,, जोश मलीहाबादी	३
४. सुवहकी आमद	,, अस्माबिल मेरठी	४
✓ ५. चूरन	,, भारतेन्दु हरिश्चंद्र	७
६. श्रीकृष्णकी बाललीला	,, नज़ीर अकबराबादी	८
७. होली	,, हरिऔध	९
८. कर्मवीर	,, "	१०
९. कौमका हमदर्द	,, हाली	११
१०. मेहनत	,, "	१३
११. अपना अपना सहारा	,, "	१३
१२. रूबाओ	,, "	१४
१३. हमारा झण्डा	,, मजाज़	१४
१४. मेरे वतनको तूने	,, अफ़सर मेरठी	१६
१५. आके हिन्द	,, चकबस्त	१७
१६. कौमकी लड़कियोंसे	,, "	१८
१७. वतन	,, "	२१
१८. मजदूर	,, असरसहवाओ	२२
१९. रोटीके मतवाले	,, श्रीमन्नारायण अग्रवाल	२३
२०. धूब बरस लो	,, " "	२४
२१. जय बोलो भारतमाताकी	,, बिसिमल अलाहाबादी	२४
२२. झाँसीकी रानी	,, सुभद्राकुमारी चौहान	२६

२३. बरभा	श्री. हाली	३१
२४. धुसरोकी पहेलियाँ	,, धुसरो	३५
२५. हालीके शेर	,, हाली	३५
२६. अकबर अिलाहाबादीके शेर	,, अकबर	३८
२७. हे मातृभूमि	,, मैथिलीशरण गुप्त	४०
२८. सारे जहाँसे अच्छा	,, अिक्रबाल	४१
२९. कौमी गीत	,, सागर निज़ामी	४२
✓ ३०. नया शिवाला	,, अिक्रबाल	४३
३१. कुछ शेर	,, ,,	४४
३२. स्वयमागत	,, मैथिलीशरण गुप्त	४५
३३. सीओ	,, श्रीनाथसिंह	४७
३४. हो शंभनाद या हो अजान	,, ,,	४८
३५. हिन्दू-मुसलमाँ	,, नूर नारवी	४९
३६. ग़ालिबके शेर	,, ग़ालिब	४९
३७. चरभा गीत	,, सियारामशरण गुप्त	५०
३८. धादी गीत	,, सोहनलाल द्विवेदी	५२
३९. मातृभूमिके सैनिक हैं	,, ,,	५४
४०. बेटीकी बिदा	,, कामताप्रसाद गुरु	५६
४१. दशहरा	,, सैयद अमीरअली	५९
४२. गिरिजासे घंटेकी टन् टन्	,, बच्चन	६१
४३. यह किसका कंकाल पड़ा है	,, शिवमंगलसिंह सुमन	६२
४४. जौकके शेर	,, जौक	६३
४५. वसन्त	,, बेहज़ाद लछनवी	६६
४६. हवा चली	,, अिस्माअिल मेरठी	६७
४७. हाय नहीं यह देखा जाता	,, शिवमंगलसिंह सुमन	६८

४८. अछूतकी आह	श्री. रामचन्द्र शुक्ल	७०
४९. प्यारा है नाम तेरा	,, हकीज़ जालन्धरी	७२
५०. माया ढलता साया	,, अल्ताफ़ मशहदी	७३
५१. रामकी याद	,, रामचरित भुपाध्याय	७४
५२. प्रेम संगीत	,, भगवतीचरण वर्मा	७६
५३. झूठे जगकी प्रीति	,, अहसान दानिश	७७
५४. सेवा	,, कुदसी जायसी	७८
५५. मीरके शेर	,, मीर	८०
५६. क्यों	,, अल्लामा क़ैक़ी	८२
५७. नया संगम	,, ,,	८३
५८. जंगलके राजा	,, भवानीप्रसाद मिश्र	८७
५९. झीनी झीनी बीनी चदरिया	,, कबीर	८९
६०. मन मस्त हुआ...	,, ,,	९०
६१. घूँघटका पट ओल	,, ,,	९०
६२. साधो सहज समाध भली	,, ,,	९१
६३. दोहे	,, ,,	९२
६४. साधो मनका मान त्यागो	,, नानक	९३
६५. काहे रे बन ओजन जाओ	,, ,,	९४
६६. तू दयालू दीन हौं	,, तुलसीदास	९४
६७. बरसा वर्णन	,, ,,	९५
६८. चुनी हुआ चौपाजियाँ	,, ,,	९६
६९. मो सम कौन कुटिल	,, सुरदास	९७
७०. सबसे अँची प्रेम सगाओ	,, ,,	९८
७१. रहीमके दोहे	,, रहीम	९८
७२. पायोजी मैंने	,, मीराबाओ	१००

सितारे



खोज

मैं ढूँढ़ता तुझे था जब कुंज और बनमें ।

तू भोजता मुझे था तब दीनके वतनमें ॥

तू आह बन किसीकी मुझको पुकारता था ।

मैं था तुझे बुलाता संगी में, भजनमें ॥

मेरे लिये झड़ा था दुःखियके द्वारपर तू ।

मैं बाट जोहता था तेरी किसी चमनमें ॥

बनकर किसीके आँसू मेरे लिये बहा तू ।

आँखें लगी थीं मेरी तब मान और धनमें ॥

बाजे बजा-बजाके मैं था तुझे रिझाता ।

जब तू लगा हुआ था पतितोंके संगठनमें ॥

मैं था विरक्त तुझसे जगकी अनित्यतापर ।

अुत्थान भर रहा था तब तू किसी पतनमें ॥

बेबस गिरे हुआके तू बीचमें झड़ा था ।

मैं स्वर्ग देभता था, झुकता कहाँ चरनमें ॥

तूने दिये अनेकों अवसर, न मिल सका मैं ।

तू कर्ममें मगन था, मैं व्यस्त था कथनमें ॥

तेरा पता सिकंदरको मैं समझ रहा था ।

पर तू बसा हुआ था फरहाद कोहकनमें ॥

कीससकी हाथमें था करता विनोद तू ही ।

तू अंतमें हँसा था महमूदके रुदनमें ॥

प्रह्लाद जानता था तेरा सही ठिकाना ।

तू ही मचल रहा था मंसूरकी रटनमें ॥

आग्निर चमक पड़ा तू गांधीकी हड्डियोंमें ।

मैं था तुझे समझता सुहराब पील-तनमें ॥

कैसे तुझे मिलूँगा जब भेद अस क़दर है ।

हैरान होके भगवन् आया हूँ मैं सरनमें ॥

तू रूप है किरनमें, सौन्दर्य है सुमनमें ।

तू प्राण है पवनमें, विस्तार है गगनमें ॥

तू ज्ञान हिन्दुओंमें, अमीमान मुस्लिमोंमें ।

तू प्रेम क्रिश्चियनमें, है सत्य तू सुजनमें ॥

हे दीनबन्धु ! ऐसी प्रतिभा प्रदान कर तू ।

देखूँ तुझे दृगोमें, मनमें तथा वचनमें ॥

कठिनाभियों-दुर्धोंका अतिहास ही सुयश है ।

मुझको समर्थ कर तू बस कष्टके सहनमें ॥

दुःखमें न हार मानूँ, सुखमें तुझे न भूलूँ ।

ऐसा प्रभाव भर दे मेरे अधीर मनमें ॥



बसो हर वक्त तुम दिलमें हमारे

बसो हर वक्त तुम दिलमें हमारे ।

कहीं चाँद और कहीं तुम हो सितारे, निराले हैं तुम्हारे रूप सारे,
हमारी जिन्दगीके हो सहारे, बसो हर वक्त तुम दिलमें हमारे,

बसो हर वक्त तुम दिलमें हमारे ।

न जाओ खूँटकर जमना किनारे, न सूरजमें करो छिपकर अिशारे,
यहीं पूजा तुम्हारी होगी प्यारे, शिवाला है यही काबिल तुम्हारे,

बसो हर वक्त तुम दिलमें हमारे ।

यह सुन्दर छत्र यह तेवर प्यारे प्यारे, हमारी जान हैं दर्शन तुम्हारे,
न टूँडो प्रीतिको तुम द्वारे द्वारे, अिसीमें प्रेमके बहते हैं धारे,

बसो हर वक्त तुम दिलमें हमारे ।



प्यासी नदी

औ बिरादर, पुलपै गंगाके जब आ जाती है रैल ।

फँकता है किसलिये पैसे, यह क्या करता है भेल ॥

फौमकी आँधोंसे जारी हैं लहूकी नद्दियाँ ।

बह रही है जिनके अन्दर अिज्जते-हिन्दोस्तों ॥

क्यों नहीं आता है तू अिस धूनकी नद्दीके पास ।

जिसको गंगासे कहीं बढ़चढ़के है दौलतकी प्यास ॥

डूबकर गंगामें अिक पैसा अुभर सकता नहीं ।

हिन्दकी आँधोंसे आँसू धुशक कर सकता नहीं ॥

कार आमद है जो आबे ज़िन्दगानीकी तरह ।

तू वही दौलत बहा देता है पानीकी तरह ॥

देखकर तेरी यह नादानी—यह कारे नासवाब ।

शर्मके मारे हुअी जाती है गंगा आब आब ॥

बाजुअे ज़र नाधुदाअीके लिये तैयार हो ।

डूबनेवाली है किस्ती कौमकी हुशियार हो ॥

की गयी ना वक्त कुर्बानी तो फिर क्या फायदा ।

सरसे अँचा हो गया पानी तो फिर क्या फायदा ॥



सुबहकी आमद

ख़बर दिनके आनेकी मैं ला रही हूँ,

अुजाला ज़मानेमें फैला रही हूँ ।

बहार अपनी मशरिकसे दिखला रही हूँ,

पुकारें गले साफ़ चिल्ला रही हूँ ।

अुठो सोनेवालो क मैं आ रही हूँ ॥

मैं सब कार-व्योहारके साथ आयी,

मैं रफ़्तार-गुफ़्तारके साथ आयी ॥

मैं बाजोंकी शनकारके साथ आयी,

मैं चिड़ियोंकी चहकारके साथ आयी ॥ अुठो०

अज्ञाँपर अज्ञाँ मुर्ग देने लगा है,

धुशीसे हरभिक जानवर बोलता है ।

दरधतोंके ऊपर अजब चहचहा है,

सुहाना है वक्त और ठण्डी हवा है ॥ अठो०

ये चिड़ियाँ जो पेड़ोंपै हैं गुल मचाती,

अधरसे अधर बुड़के हैं आती-जाती ।

दुमोंको हिलाती परोँको फुलाती,

मिरी आमद आमदके हैं गीत गाती ॥ अठो०

जो तोतोने बागोंमें टें टें मचाओ,

तो बुलबुल भी गुलशनमें है चहचहाओ ।

और अँची मुँडेरोंपै शामा भी गाओ,

मैं सौ सौ तरह दे रही हूँ दुहाओ ॥ अठो०

हरभिक बागको मैंने महका दिया है,

नसीमे सबको भी लहका दिया है ।

चमन सुर्ष फूलोंसे दहका दिया है,

मगर नींदने तुमको बहका दिया है ॥ अठो०

हुओ मुझसे रौनक पहाड़ और बनमें,

हरभिक मुलकमें, देसमें और वतनमें ।

झिलाती हुओ फूल आओ चमनमें,

बुझाती चली शामा नौ अंजुमनमें ॥ अठो०

जो अिस वक्त जंगलकी बूटी जड़ी है,
 सो वह नौलखा हार पहने छड़ी है ।
 अजब यह समों है अजब यह घड़ी है,
 कि पिछलेकी ठण्डकसे शबनम पड़ी है ॥ अुठो०
 हिरन चौंककर चौकड़ी भर रहे हैं,
 कुलेलें हरअिक छेतमें कर रहे हैं ।
 नदीके किनारे छड़े चर रहे हैं,
 गरज मेरे जलवेपै सब मर रहे हैं ॥ अुठो०
 मैं तारोंकी छाँ आन पहुँची यहाँतक,
 ज़मीसे है जलवा मिरा आस्माँतक ।
 मुझे पाओग देखते हो जहाँतक,
 करोगे भला काहिली तुम कहाँतक ॥ अुठो०
 पुजारीको मन्दिरके मैंने जगाया,
 मुअज़्ज़िनको मस्जिदमें मैंने अुठाया ।
 भटकते मुसाफिरको रस्ता बताया,
 अन्धेरा घटाया अुजाला बढ़ाया ॥ अुठो०
 लड़े काफिलोंके भी मंज़िलसे डेरे,
 किसानोंके हल चल पड़े मुँह-अँधेरे ।
 चले जाल कन्धोंपै लेके मछेरे,
 दलिद्दर हुआ दूर आनेसे मेरे ॥ अुठो०

लो हुशियार हो जाओ और आँख झोलो,
 न लो करवटें और न बिस्तर टटोलो ।
 झुदाको करो याद और मुँहसे बोलो,
 बस अब धैरसे अुठके मुँह-हाथ धो लो ॥
 अुठो सोनेवालो कि मैं आ रही हूँ ॥

★

चूरन

चूरन अमल बेदका भारी । जिसको आते कृष्ण मुरारी ।
 मेरा पाचक है पचलोना । जिसको आता श्याम सलोना ।
 चूरन बना मसालेदार । जिसमें अट्टेकी बहार ।
 मेरा चूरन जो कोखी आय । मुझको छोड़ कहीं नहीं जाय ।
 हिन्दू चूरन इसका नाम । विलायत पूरन इसका काम ।
 चूरन जबसे हिन्दमें आया । इसका धन बल सभी घटाया ।
 चूरन ऐसा हट्टा-कट्टा । कीना दाँत सभीका अट्टा ।
 चूरन अमले सब जो आवैं । दूनी शिखत तुरत पचावैं ।
 चूरन नाटकवाले आते । इसकी नकल पचाकर लाते ।
 चूरन सभी महाजन आते । जिससे जमा हज़म कर जाते ।
 चूरन आते लाल लोग । जिनको अकिल अजीरन रोग ।
 चूरन आवैं अेडिटर जात । जिनके पेट पचै नहीं बात ।

चूरन साहेब लोग जो जाता । सारा हिन्द हज़म कर जाता ।

चूरन पुलिसवाले आते । सब कानून हज़म कर जाते ।
ले चूरनका ढेर । बेचा टके सेर ।

★

श्रीकृष्णकी बाल-लीला

यारो सुनो ये 'दधिके लुटैया' का बालपन ।

औ मधुपुरी नगरके बसैयाका बालपन ॥

मोहन सरूप नृत्य करैयाका बालपन ।

बन-बनके ग्याल गौवें चरैयाका बालपन ॥

ऐसा था बाँसुरीके बजैयाका बालपन ।

क्या क्या कहूँ मैं कृष्ण कन्हैयाका बालपन ॥१॥

ज़ाहिरमें सुत वो नन्द-जसोदाके आप थे ।

बरना वो आपी माभी थे और आपी बाप थे ॥

परदेमें बालकपनके ये अुनके मिलाप थे ।

जोती-सरूप कहियें जिन्हें सो वो आप थे ॥

ऐसा था बाँसुरीके बजैयाका बालपन ।

क्या क्या कहूँ मैं कृष्ण कन्हैयाका बालपन ॥२॥

अुनको तो बालपनसे न था काम कुछ ज़रा ।

संसारकी जो रीति थी अुसको रखा बजा ॥

मालिक थे वह तो आपी अन्हें जालपनसे क्या ।

बाँ बालपन जवानी बुढ़ापा सब अेक था ॥

ऐसा था बाँसुरीके बजैयाका बालपन ।

क्या क्या कहूँ मैं कृष्ण कन्हैयाका बालपन ॥ ३ ॥

बाले हो विजराज जो दुनियाँमें आ गये ।

लीलाके लाख रंग तमाशे दिआ गये ॥

अिस बालपनके रूपमें कितनोंको भा गये ।

अेक यद्व भी लहर थी जो जहाँको जता गये ॥

ऐसा था बाँसुरीके बजैयाका बालपन ।

क्या क्या कहूँ मैं कृष्ण कन्हैयाका बालपन ॥ ४ ॥

सब मिलके यारो कृष्णमुरारीकी बोलो जै ।

गोविन्द छैल कुञ्जबिहारीकी बोलो जै ॥

दधि चोर गोपीनाथ बिहारीकी बोलो जै ।

तुम भी नज़ीर कृष्णमुरारीकी बोलो जै ॥

ऐसा था बाँसुरीके बजैयाका बालपन ।

क्या क्या कहूँ मैं कृष्ण कन्हैयाका बालपन ॥ ५ ॥

★ ★ ★
होली

मान अपना बचाओ, सग्हलकर पाँव अुठाओ,

गाओ भाव भरे गीतोंको, बाजे अुमग बजाओ,

तानें ले ले रस बरसाओ, पर ताने न सदाओ,

भूल अपनेको न जाओ ॥ १ ॥

बात हँसीकी मरजादासे कहकर हँसो-हँसाओ,
पर अपनेको बात बुरी कह आँधोंसे न गिराओ,
हँसी अपनी न कराओ ॥२॥

छेलो रंग अबीर अड़ाओ लाल गुलाल लगाओ,
पर अति सुरंग लाल चादरको मत बदरंग बनाओ,
न अपना रंग गँवाओ ॥३॥

जन्म-भूमिकी रजको लेकर सिरपर ललक चढ़ाओ,
पर अपने ऊँचे भावोंको मिट्टीमें न मिलाओ,
न अपनी धूल अड़ाओ ॥४॥

प्यार अमंग-रंगमें मीगो सुन्दर फाग मचाओ,
मिल-जुल जीकी गाँठ ओलो हितकी गाँठ बँधाओ,
प्रीतिकी बेलि अगाओ ॥५॥

★

कर्मवीर

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं ।

रह भरोसे भागके दुख भोग पछताते नहीं ॥

काम कितना ही कठिन हो किन्तु अुकताते नहीं ।

भीड़में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं ॥

हो गये यक आनमें उनके बुरे दिन भी भले ।

सब जगह सब कालमें वे ही झिले फूले फले ॥१॥

आज करना है जिसे करते असे हैं आज ही ।

सोचते, कहते हैं जो कुछ कर दिखाते हैं वही ॥

मानते जीकी हैं सुनते हैं सदा सबकी कही ।

जो मदद करते हैं अपनी इस जगतमें आप ही ॥

भूलकर वे दूसरोंका मुँह कभी तकते नहीं ।

कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं ॥२॥

जो कभी अपने समयको यों बिताते हैं नहीं ॥

काम करनेकी जगह बातें बनाते हैं नहीं ।

आजकल करते हुअे जो दिन गँवाते हैं नहीं ।

यत्न करनेमें कभी जो जी चुराते हैं नहीं ॥

बात है वह कौन जो होती नहीं अुनके किये ।

वे नमूना आप बन जाते हैं औरोंके लिये ॥३॥

★
★

कौमका हमदर्द

है कोअी अपनी कौमका हमदर्द ॥

नूअ अिन्साँका जिसको समझें फदि ॥

जिसस्पे अितलाके आदमी हो सहीह ।

जिसको छेसाँपे दे सकें तर्जीह ॥

कौमपै कोअी ज़द न देख सके ।

कौमका हाले बद न देख सके ॥

कौमसे जान तक अजीज न हो ।

कौमसे बढ़के कोभी चीज न हो ॥

समझे अुनकी धुशीको राहते नाँ ।

वहाँ जो नौरोज हो तो ओद हो याँ ॥

रंजको अुनके समझे मायये र.म ।

वाँ अगर सोग हो तो याँ मातम ॥

मूल जाये सब अपनी कदरै जलील ।

देअकर भाजियोंको छत्रारो जलील ॥

जब पड़े अुनपै गर्दिशे-अफलाक ।

अपनी आसायशों पै डाल दे झाक ॥

बैठे बेफिक्र क्या हो हमबतनो ।

अठो अहले कतनके दोस्त बनो ॥

मर्द हो तो किसीके काम आओ ।

वर्ना आओ पिओ चले जाओ ॥

जागनेवालो गाफिलोंको जगाओ ।

तेरनेवालो इबतोंको तिराओ ॥

तुम अगर हाथ-पाँव रखते हो ।

लँगड़े-ल्लोंको कुछ सहारा दो ॥

तन्दुरुस्तीका शुक्र क्या है बताओ ।

रंज बीमार भाजियोंका बँटाओ ॥

तुम अगर चाहते हो मुल्ककी धैर ।

न किसी हमवतनको समझो गैर ॥

हो मुसलमान इसमें या हिन्दू ।

बोध मःहब हो या कि हो ब्रह्म ॥

सबको मीठी निगाहसे देखो ।

समझो आँझोंकी पुतलियाँ सबको ॥

★
★

मेहनत

छपाते हैं कोशिशमें ताबो तवाँको ।

घुलाते हैं मेहनतमें जिस्मो रवाँको ॥

समझते नहीं इसमें जाँ अपनी आँको ।

वह मर मरके रहते हैं जिन्दा जहाँको ॥

बस इस तरह जीना अिवादत है अुनकी ।

और इस धुनमें मरना शहादत है अुनकी ॥

★
★

आप अपना सहारा

बशरको है लाज़िम कि हिम्मत न हारे ।

जहाँ तक हो काम आप अपने सँवारे ॥

छुदाके सिवा छोड़ दे सब सहारे ।

कि है आरज़ी ज़ोर, कमज़ोर सारे ॥

अड़े वक्त तुम दायें बायें न झाँको ।
सदा अपनी गाड़ीको गर आप हाँको ॥

★
★★

रूबाओ

मुमकिन ये नहीं कि हो बशर अबसे दूर ।
पर अबसे बचिये ता ब सकदूर ज़रूर ॥
अब अपने घटाओ पै ज़बरदार रहो ।
घटनेसे कहीं अनुके न बढ़ जाये ग़रूर ॥
मूसाने यही की अर्ज़ कि ऐ बारे धुदा !
मकबूल तेरा कौन है बन्दोंमें सिवा ॥
अिरशाद हुआ बन्दा हमारा वह है ।
जो ले सके और न ले बदीका बदला ॥

★
★★

हमारा झण्डा

शेर क्या चलते हैं दराते हुअे,
बादलोंकी तरह मण्डलाते हुअे,
ज़िन्दगीकी रागिनी गाते हुअे,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥१॥
हाँ यह सच है भूखसे हैरान हैं,
पर यह मत समझो कि हम बेजान हैं,

अस बुरी हालत में मी तूफान हैं,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥२॥

हम वह हैं जो बेखुशी करते नहीं,
हम वह हैं जो मौतसे डरते नहीं,
हम वह हैं जो मरके भी मरते नहीं,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥३॥

चैनसे महलोंमें हम रहते नहीं,
ऐशकी गंगामें हम बहते नहीं,
मेद दुस्मनोंसे कभी कहते नहीं,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥४॥

जानते हैं अक लश्कर आगया,
तोप दिखलाकर हमें धमकायेगा,
पर यह झण्डा भी यों ही लहरायेगा,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥५॥

कब भला धमकीसे घबराते हैं हम,
दिलमें जो होता है कह जाते हैं हम,
आस्माँ हिलता है जब गाते हैं हम,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥६॥

लाख लश्कर आये कब हिलते हैं हम,
आँधियोंमें जंगकी झिलते हैं हम,
मौतसे हँसकर गले मिलते हैं हम,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥७॥

अड़े वक्त तुम दायें बायें न झौंकों ।
सदा अपनी गाड़ीको गर आप हौंको ॥

★
★★

रूबाओ

मुमकिन ये नहीं कि हो बशर ऐबसे दूर ।
पर ऐबसे बचिये ता ब मकदूर ज़रूर ॥
ऐब अपने घटाओ पै धरदार रहो ।
घटनेसे कहीं अनके न बढ़ जाये गरूर ॥
मूसाने यही की अर्ज कि ऐ बारे धुदा ।
मकबूल तेरा कौन है बन्दोंमें सिवा ॥
अिरशाद हुआ बन्दा हमारा वह है ।
जो ले सके और न ले बदीका बदला ॥

★
★★

हमारा झण्डा

शेर क्या चलते हैं दरारें हुअे,
बादलोंकी तरह मण्डलाते हुअे,
ज़िन्दगीकी रागिनी गाते हुअे,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥१॥
हाँ यह सच है भूअसे हैरान हैं,
पर यह मत समझो कि हम बेजान हैं,

अस बुरी हालत में भी तूफान हैं,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥२॥

हम वह हैं जो देखभी करते नहीं,
हम वह हैं जो मौतसे डरते नहीं,
हम वह हैं जो मरके भी मरते नहीं,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥३॥

चैनसे महलोंमें हम रहते नहीं,
अशकी गंगामें हम बहते नहीं,
भेद दुश्मनोंसे कभी कहते नहीं,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥४॥

जानते हैं अक लश्कर आगया,
तोप दिखलाकर हमें धमकायेगा,
पर यह झण्डा भी यों ही लहरायेगा,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥५॥

कब भला धमकीसे घबराते हैं हम,
दिलमें जो होता है कह जाते हैं हम,
आस्माँ हिलता है जब गाते हैं हम,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥६॥

लाख लश्कर आये कब हिलते हैं हम,
आँधियोंमें जंगकी झिलते हैं हम,
मौतसे हँसकर गले मिलते हैं हम,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥७॥

मेरे वतनको तूने जन्नत बना दिया है

(१)

यह आस्माँ बनाया, सारा जहाँ बनाया ।

हिन्दोस्ताँ बनाया, सारा जहाँ बनाया ।

क्या शुक्र हो अिलाही सब कुछ अता किया है ।

मेरे वतनको तूने जन्नत बना दिया है ॥

(२)

कानोंको भर दिया है, मिट्टीमें ज़र दिया है ।

अकसीर कर दिया है, क्या प्यारा घर दिया है ।

क्या शुक्र हो अिलाही सब कुछ अता किया है ।

मेरे वतनको तूने जन्नत बना दिया है ॥

(३)

बरसात आ रही है, झुला झुला रही है ।

कलियाँ झिला रही है, दिलको लुभा रही है ।

क्या शुक्र हो अिलाही सब कुछ अता किया है ।

मेरे वतनको तूने जन्नत बना दिया है ॥

(४)

परबत जो अेक यँ है, हमदोश आस्माँ है ।

कैसा अजब समाँ है, ऐसी ज़मीं कहाँ है ।

क्या शुक्र हो अिलाही सब कुछ अता किया है ।

मेरे वतनको तूने जन्नत बना दिया है ॥

(५)

यह इसकी कुटी है, 'अफसर' की झोंपड़ी है ।

किस दर्जा सादगी है, राहतकी ज़िन्दगी है ।

क्या शुक हो अिलाही सब कुछ अता किया है ।

मेरे वतनको तूने जन्नत बना दिया है ॥

★★

खाके हिन्द

औं खाके हिन्द तेरी अज़मतमें क्या गुमाँ है ।

दरयाये फैजे कुदरत तेरे लिये रवाँ है ॥

तेरी जर्बी से नूरे हुस्ने अज़ल अयाँ है ।

अल्लाह रे ज़ेबो ज़ीनत क्या औज अिज़्जोशॉ है ॥

हर सुब्ह है यह ख़िदमत धुरशीद पुर ज़याकी ।

किरनोंसे गूँधता है चोटी हिमालियाकी ॥

*

*

*

गौतमने आबरू दी अिस वादिये कोहन को ।

सरमदने अिस ज़मीं पर सदके किया वतनको ॥

अकबरने जामे अुल्फत बछ्शा अिस अंजुमनको ॥

सींचा लहू से अपने राना ने अिस चमनको ॥

सब सर बीर अपने अिस छाँक में निहाँ हैं ।

टूटे हुअे अंडर हैं या अुनकी हड्डियाँ हैं ॥

*

*

*

कशमीरसे अयाँ है जन्नतका रंग अब तक ।

शौकतसे बह रहा है दरयाये गंग अब तक ॥

अगली सी ताज़गी है फूलोंमें और फलोंमें !

करते हैं रक्त अब तक ताअूस जंगलोंमें ॥

*

*

*

बुलबुलको गुल मुबारक, गुलको चमन मुबारक ।

हम बेकसोंको अपना प्यारा वतन मुबारक ॥

गुचे हमारे दिलके . अिस बागमें छिलेंगे ।

अिस बागसे अुठे हैं अिस बागमें मिलेंगे ॥

*

*

*

है जूये शीर हमको नूरे सहेर वतनका ।

आँखोंकी रौशनी है जल्वा अिस अंजुमनका ॥

है रश्क मह ज़री अिस मंज़िले कोहनका ।

तुलना है बगें गुलसे काँटा भी अिस चमनका ॥

गर्दों गुबार याँका छिलअत है अपने तनको ।

मरकर भी चाहते हैं धाके वतन कफ़न को ॥

★
★★

कौमकी लड़कियोंसे

रविशे धाम पे मदाकी न जाना हरगिज़ ।

दाग़ तालीममें अपनी न लगाना हरगिज़ ॥

नाम रक्खा है नुमाबिशका तख्की व रिफार्म ।

तुम अस अंदाज़के धोड़ेमें न आना हरगिज़ ॥

रंग है जिनमें मगर बूअे वफा कुछ मी नहीं ।

अैसे फूलोंसे न घर अपना सजाना हरगिज़ ॥

नक्कल योरपकी मुनासिब है मगर याद रहे ।

आकमें गैरते कौमी न मिलाना हरगिज़ ॥

धुद जो करते हैं ज़मानेकी रविशको बदनाम ।

साथ देता नहीं असोंका ज़माना हरगिज़ ॥

धुद-परस्तीको लक़ब देते हैं आज़ादीका ।

अैसे अफ़लाक़ पै अीमान न लाना हरगिज़ ॥

रंगो रौग़न तुम्हें योरपका मुबारक लेकिन ।

कौमका नक्श न चेहरेसे मिटाना हरगिज़ ॥

जो बनाते हैं नुमाबिशका भिलौना तुमको ।

अुनकी आतिरसे यह ज़िल्लत न अुठाना हरगिज़ ॥

रुख़से परदेको अुठाय़ा तो बहुत धूब किया ।

परदअे शरमको दिखसे न अुठाना हरगिज़ ॥

तुमको कुदरतने जो बख़शा है हयाका ज़ेवर ।

मोल असका नहीं काख़ँका धज़ाना हरगिज़ ॥

दिल तुम्हारा है वफ़ाओंकी परस्तिशके लिये ।

अुस मुहब्बतके शिवालयको न ढाना हरगिज़ ॥

पूजनेके लिये मन्दिर जो है आज़ादीका ।

असको तफ़रीहका मरकज़ न बनाना हरगिज़ ॥

नक़द अख़लाक़का हम नलकी तरह हार चुके ।

तुम हो दमयन्ती यह दौलत न लुटाना हरगिज़ ॥

आकमें दफ़न है मज़हबके पुराने पाध़ंड ।

तुम यह सोते हुअे फ़ितने न जगाना हरगिज़ ॥

अपने बच्चोंकी ध्वर कौमके मदोंको नहीं ।

यह हैं मासूम अन्हें भूल न जाना हरगिज़ ॥

अनकी तालीमका मकतब है तुम्हारा जानू ।

पास मदोंके नहीं अउनका ठिकाना हरगिज़ ॥

कागज़ी फ़ूल विलायतके दिआकर अउनको ।

देशके बाग़से नफ़रत न दिलाना हरगिज़ ॥

नग़मअे कौमकी लय जिसमें समा ही न सके ।

राग़ ऐसा कोअी अउनको न सिआना हरगिज़ ॥

परवरिश कौमकी दामनमें तुम्हारे होगी ।

याद अिस फ़र्ज़की दिलसे न भुलाना हरगिज़ ॥

गो बुजुर्गोंमें तुम्हारे न हो अिस वक़्तका रंग ।

अन ज़अीफ़ोंको न हँस-हँसके रुठाना हरगिज़ ॥

होगा परलय जो गिरा आँअसे अिनकी आँसू ।

बचपने-से न यह तूफ़ान अुठाना हरगिज़ ॥

हम तुम्हें भूल गये जिसकी सज़ा पाते हैं ।

तुम ज़रा अपने तर्फी भूल न जाना हरगिज़ ॥

किसके दिलमें है वफ़ा किसकी ज़ब्रोंमें तासीर ।

न सुना है न सुनोगी यह फसाना हरगिज़ ॥

★★

वतन

यह प्यारी अंजुमन हमको मुबारक,

यह अलफ़तका चमन हमको मुबारक,

वतनको हम, वतन हमको मुबारक ॥

यहाँकी धाक हमको कीमिया है,

यह सोनेसे भी कीमतमें सिवा है,

वतनको हम, वतन हमको मुबारक ॥

जो चिड़ियाँ सुबहको गाती हैं अकसर,

जिसीका राग है अनकी क़व्वाँ पर,

वतनको हम, वतन हमको मुबारक ॥

वह सावनके महीनेकी घटायें,

वह कोयल और पपीहेकी सदायें,

वतनको हम, वतन हमको मुबारक ॥

वह अिक मस्तीका आलम बादलोंमें,

वह फूलोंका महकना जंगलोंमें,

वतनको हम, वतन हमको मुबारक ॥

वह चश्मे और वह अमृत-सा पानी,
 वह गंगा और जमनाकी रवानी,
 वतनको हम, वतन हमको सुबारक ॥

दरख्तों पर वह चिड़ियोंका चहकना,
 वह बेले और चमेलीका महकना,
 वतनको हम, वतन हमको सुबारक ॥

अिसीकी ध्वाकसे लेते हैं महसूल,
 यही देता है गुल्ला और फलफूल,
 वतनको हम, वतन हमको सुबारक ॥

वतनका जिन बुजुर्गोंसे हुआ नाम,
 अिसी मिट्टीमें वह करते हैं आराम,
 वतनको हम, वतन हमको सुबारक ॥

★
★

मजदूर

ऐ दौलतोज़रखालो, ऐ जाहोहरमखालो,
 ऐ लालो गौहरखालो, ऐ ताजोझंडेखालो,
 सोचा है कमी तुमने वह वक़्त भी क्या होगा,
 मजदूरकी शोरिशसे जब हसर बपा होगा ॥

छुट जायेगी रंगीनी, गुलज़ार मुसरतकी,
 गिर जायेंगी दीवारें, आवाने हुकूमतकी,

काशानये अशरतमें कुहराम मचा होगा,

मज़दूरकी शोरिशसे जब हसर बपा होगा ।

॥ मज़दूरका धूँ सदियों, जी भरके पिया तुमने,

अिन्सानकी जन्नतको, बरबाद किया तुमने,

औ ताज अलमवालो, क्या जानिये क्या होगा,

॥ मज़दूरकी शोरिशसे जब हसर बपा होगा ॥

है सोगमें अिक दुनिया, तुम ऐश मनाते हो,

है आग लगी/घरमें, तुम नाचते गाते हो,

॥ औ ऐशके मतवालो अंजाम बुरा होगा,

मज़दूरकी शोरिशसे जब हसर बपा होगा ॥

★★

रोटीके मतवाले

हम तो रोटीके मतवाले !

नहीं चाह मदिराकी साकी क्या होंगे ये प्याले ?

सुरापान कर जीवनके दुःख नहीं भुलाना हमको,

हम तो दुःखजीवनके प्रेमी, गावें राग निराले !

विस्पृतिके सागरमें बहना, हम अति तुच्छ समझते,

कंटकमय जीवनपथ चलते, पड़े पदोंमें छाले,

अिन काँटोंकी पीर जगानेको आते हम रोटी,

पाकर जीवनदान अुसीमें हो जाते मतवाले !

★★

खूब बरस लो

खूब बरस लो तुम भी आज ।

यह आँखें तो सदा बरसतीं, तुम भी खूब बरस लो आज,
अस छोटीसी सड़ी झोंपड़ामें, जलधर क्या पाओगे ?
समी ओर तुम टपक टपककर जल ही व्यर्थ गँवाओगे !
तुम बरसो, मैं भी बैठा हूँ, होगा नहीं किसीका काज,

खूब बरस लो तुम भी आज ।

छूट लिया सब दरिद्रताने, गया लाल भी पिछले साल,
रखता है क्या कोअी आशा, अब यह फूटा हुआ कपाल
कौन नये अंकुर उपजाते, आये हो जो सजकर साज ?
शान्त रात्रिके अस क्षणमें, क्या तुम्हें-पड़ी थी आनेकी,
दिनभर मैं श्रम कर सोया था, क्या यह घड़ी जगानेकी ?
सुनने आये हो कि सुनाने, मेरा अपना टप-टप बाज ?

★
★

जय बोली भारत माताकी

दुःख सागरमें यह बहती है, रोज़ अेक मुसीबत सहती है,
चिन्तामें हमेशा रहती है, यूँ दिलकी कहानी कहती है ॥
दिनरात तड़प कर रोती है, अश्कोंसे यह दामन धोती है,
सुख नींद कहाँ यह सोती है, बेचैन हमेशा होती है ॥

दुःख दर्द मुसीबत है ग़म है, आँध्रोंमें रुका आ कर दम है,
 हर साँस पर अपना मातम है, अफ़सोस ग़ज़बका आलम है ॥
 दिनरात मचलते रहती है, बरबट यह बदलती रहती है,
 रह रहके सँभलती रहती है, किस आगमें जलती रहती है ॥
 दुनियाँने अिसे क्या समझा है, अेक ज़ेल तमाशा समझा है,
 समझा है यह अच्छा समझा है, क्या राहका तिनका समझा है ॥
 संसार फ़ुँकेगा आहोसे, बदला लेगी यह शाहोसे,
 गुज़रेगी कुछ ऐसी राहोसे, भटका ही नहीं बदध्वाहोकी ॥
 दुनियाँको हिला देगी अुठकर, दुनियाँको दिछा देगी अुठकर,
 दुनियाँको जता देगी अुठकर, दुनियाँको बता देगी अुठकर ॥
 संकटसे न यह घबरायेगी, झण्डा अपना लहरायेगी,
 क्या चीज़ है यह समझायेगी, दुनियाँमें नाम कमायेगी ॥
 जंजीरे गुलामी तोड़ेगी, अेक अेकसे नाता जोड़ेगी,
 रंग अपना जमाकर छोड़ेगी, अिससे न कमी मुँह मोड़ेगी ॥
 आज़ादीकी दीवानी है, यह बात तो समझी जानी है,
 भ्नाक अिसने बहुत कुछ छान्नी है, मशहूर जहाँ कुरबानी है ॥
 अेक अेकका सर अब धम होगा, दुनियाँका कहाँ कब ग़म होगा,
 और अपना नया आलम होगा, 'बिस्मिल' का तड़पना कम होगा ॥

झाँसीकी रानी

सिंहासन हिल अठे, राजवंशने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारतमें मी आओ फिरसे नओ जवानी थी,
गुमी हुओ आजादीकी कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगीको करनेकी सबने मनमें ठानी थी,

चमक ओठी सन् सत्तावनमें वह तलवार पुरानी थी ।

बुन्देले हरबोलोके मुझ हमने सुनी कहानी थी ।

धूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसीवाली रानी थी ॥

कानपूरके नानाकी मुँहबोली बहिन छबीली थी,
लक्ष्मीबाओ नाम पिताकी वह सन्तान अकेली थी,
नानाके संग पढ़ती थी वह नानाके संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी, ओसकी यही सहेली थी,

वीर शिवाजीकी गाथाओं ओसको याद जवानी थी ।

बुन्देले हरबोलोके मुझ हमने सुनी कहानी थी ॥धूब लड़ी०

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरताकी अवतार,
देख मराठे पुलकित होते ओसकी तलवारोंके वार,
नकली युद्ध व्यूहकी रचना और खेलना धूब शिकार,
सैन्य घेरना दुर्ग तोड़ना ये थे ओसके प्रिय झिलवार,

महाराष्ट्र-कुल-देवी ओसकी मी आराध्य भवानी थी ।

बुन्देले हरबोलोके मुझ हमने सुनी कहानी थी ॥धूब लड़ी०

हुआ वीरताकी वैभवके साथ सगाही झाँसीमें,
 व्याह हुआ रानी बन आओ लक्ष्मीबाओ झाँसीमें,
 राजमहलमें बजी बधाओ धुशियाँ छाओ झाँसीमें,
 सुभट बुन्देलोंकी बिरुदावलि-सी वह आओ झाँसीमें,

चित्राने अर्जुनको पाया शिवसे मिली भवानी थी ।

बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी ॥ध्रुव लड़ी०

भुदित हुआ सौभाग्य ! मुदित महलोंमें अजियाली छाओ,
 किन्तु काल-गति चुपके चुपके काली घटा घेर लओ,
 तीर चलानेवाले करमें असे चूड़ियाँ कब भाओ,
 रानी बिधवा हुआ हाय ! बिधिको भी नहीं दया आओ,

निःसन्तान मरे राजाजी रानी शोक समानी थी ।

बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी ॥ध्रुव लड़ी०

बुझा दीप झाँसीका तब डलहौजी मनमें हरषाया,
 राज्य हड़प करनेका असने यह अच्छा अवसर पाया,
 फौरन फौजें भेज दुर्गपर अपना झण्डा फहराया,
 लावारिसका वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,

अश्रु-पूर्ण सनीने देखा झाँसी हुआ बिरानी थी ।

बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी ॥ध्रुव लड़ी०

अनुनय-विनय नहीं सुनता है, बिकट शासकोंकी माया,
 व्यापारी बन दया चाहता था यह जब भारत आया,

डलहौजीने पैर पसारे अब तो पलट गयी काया,
राजाओं, नव्वाबोंको भी अुसने पैरों ठुकराया,

रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महारानी थी ।

बुन्देले हरबोलोंके मुझ हमने सुनी कहानी थी ॥ ध्रुव लड़ी०

छिनी राजधानी देहलीकी लछनअू छीना बातों बात,
कैद पेशवा था विठ्ठरमें हुआ नागपुरका भी घात,
अुदयपूर, तंजौर, सतारा, करनाटककी कौन बिसात,
जब कि सिंध, पंजाब, ब्रह्मपर अभी हुआ था वज्राघात,

बंगाले, मद्रास आदिकी भी तो वही कहानी थी ।

बुन्देले हरबोलोंके मुझ हमने सुनी कहानी थी ॥ ध्रुव लड़ी०

रानी रोअी रनिवासोंमें बेगम गमसे थीं बेज़ार,
अुनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्तेके बाज़ार,
सरे आम नीलाम छापते थे अँप्रेज़ोंके अञ्चार,
'नागपूरके ज़ेवर ले लो' 'लछनअूके लो नौलछ हार'

यों परदेकी अिज़्ज़त परदेशीके हाथ बिकानी थी ।

बुन्देले हरबोलोंके मुझ हमने सुनी कहानी थी ॥ ध्रुव लड़ी०

कुटियोंमें थी विषम वेदना महलोंमें आहत अपमान,
वीर सैनिकोंके मनमें था अपने पुरखोंका अभिमान,
नाना धुन्दूपन्त पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीलीने-रणचण्डीका कर दिया प्रकट आह्वान,

हुआ यज्ञ प्रारम्भ अुन्हें तो सोअी ज्येति जगानी थी ।

बुन्देले हरबोलोंके मुझ हमने सुना कहानी थी ॥ ध्रुव लड़ी०

महलोंने दी आग, शौपड़ीने ज्वाला सुलगायी थी,
यह स्वतंत्रताकी चिनगारी अन्तरतमसे आयी थी,
शौसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छापी थीं,
मेरठ, कानपूर, पटनाने भारी धूम मचाओ थी,

जबलपूर, कोल्हापुरमें भी कुल हलचल अकसानी थी ।

बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी ॥ ध्रुव लड़ी०

अस स्वतंत्रता-महायज्ञमें कभी वीरवर आये काम,
नाना, धुन्डूपन्त, तातिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम,
अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह, सैनिक अभिराम,
भारतके अतिहास गगनमें अमर रहेंगे जिनके नाम,

लेकिन आज जुर्म कहलाती अउनकी जो कुर्बानी थी ।

बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी ॥ ध्रुव लड़ी०

अिनकी गाथा छोड़ चलें हम शौसीके मैदानोंमें,
जहाँ झड़ी है लक्ष्मीबायी मर्द बनी मर्दानोंमें,
लेफ्टिनेन्ट वौकर आ पहुँचा आगे बढ़ा जवानोंमें,
रानीने तलवार थींच ली हुआ द्बन्द्व असमानोंमें,

जुझमी होकर वौकर भागा अजब अुसे हेरानी थी ।

बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी ॥ ध्रुव लड़ी०

रानी बड़ी कालपी आयी कर सौ मील निरन्तर पार,
घोड़ा थककर गिरा भूमिपर गया स्वर्ग तत्काल सिधार,

यमुना-तटपर अँग्रेजोंने फिर आयी रानीसे हार,
विजयी रानी आगे चल दी किया ग्वालियरपर अधिकार,

अँग्रेजोंके मित्र सिंधियाने छोड़ी राजधानी थी ।

बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी ॥ झूब लड़ी०

विजय मिली, पर अँग्रेजोंकी फिर सेना फिर आयी थी,
अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था उसने मुँहकी आयी थी,
काना और मंदिरा सन्धियाँ रानीके संग आयी थी,
युद्ध-क्वपेत्रमें उन दोनोंने भारी मार मचायी थी,

पर पीछे ह्यूरीज आ गया हाय ! विरी अब रानी थी ।

बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी ॥ झूब लड़ी०

तो भी रानी मार काटकर चलती बनी सैनके पार,
किन्तु सामने नाटा आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, अितनेमें आ गये सवार,
रानी अेक शत्रु बहुतेरे, होने लगे बार-पर-बार,

घायल होकर गिरी सिंहनी उसे वीर गति पानी थी ।

बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी ॥ झूब लड़ी०

रानी गयी सिधार ! चिता अब उनकी दिव्य सँवारी थी,
मिला तेज-से-तेज, तेजकी वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी अुन्न कुल तेअीसकी थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी बन स्वतंत्रता नारी थी,

दिआ गयी पथ, सिआ गयी हमको जो सीध सिआनी थी ।

बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी ॥ झूब लड़ी०

जाओ रानी, याद रहेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
 यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी,
 होवे चुप अतिहास, लगे सच्चाभीको चाहे फाँसी,
 हो मदमाती विजय मिटा दे गोलोंसे चाहे झाँसी,

तेरा स्मारक तू ही होगी, तू धुद अमिट निशानी है ।
 बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी । ध्रुव लड़ी०

★
 ★★

बरखा

कल शामतलक तो थे यही तौर ।
 पर रातसे है समों ही कुछ और ॥१॥

पुरवाकी दुहायी फिर रही है ।
 पछवासे धुदायी फिर रही है ॥२॥

गरसातका बज रहा है डंका ।
 एक शोर है आस्माँपै बरपा ॥३॥

है अब्रकी फौज आगे आगे ।
 और पीछे हैं दल-के-दल हवाके ॥४॥

रंग बिरंगके रिसाले ।
 रे हैं कहीं कहीं हैं काले ॥५॥

है चर्खेपै छावनी-सी छाती ।
 अक आती है फौज अक जाती ॥६॥

जाते हैं मुहिमपै कोओ जाने ।
हमराह हैं छाओं तोपझाने ॥७॥

तोपोंकी है जत्र बाढ़ चलती ।
छाती है ज़मीनकी दहेलती ॥८॥

मेहका है ज़मीनपर दंडेड़ा ।
गर्मीका डुबो दिया है वेड़ा ॥९॥

बिजली है कभी जो कौंद जाती ।
आँध्रोंमें है रोशनी-सी आती ॥१०॥

घनघोर घटाओं छा रही हैं ।
जन्नतकी हवाओं आ रही हैं ॥११॥

कोसों, है जिधर निगाह जाती ।
कुदरत है नज़र धुदाकी आती ॥१२॥

सूरजने नकाब ली है मुँहपर ।
और धूपने तह किया है बिस्तर ॥१३॥

बाग़ोंने किया है गुस्ले सेहत ।
छेतोंको मिला है सब्ज झिलअत ॥१४॥

सब्जे से कोह व दस्त मामूर ।
है चार तरफ़ बरस रहा नूर ॥१५॥

बटिया है न है सड़क नमूदार ।
अटकलसे हैं राह चलते रहवार ॥१६॥

है संगो शजरकी अक वर्दी।
आलम है तमाम लाजवरदी ॥१७॥

फूलोंसे पटे हुअे हैं कुहसार।
दूल्हा-से बने हुअे हैं अशजार ॥१८॥

पानीसे भरे हुअे हैं जल-थल।
है गूँज रहा तमाम जंगल ॥१९॥

करते हैं पपीहे पीहू पीहू।
और मोर चिंघाड़ते हैं हर सू ॥२०॥

कोयलकी है कूक जी लुभाती।
गोया कि है दिलमें बैठी जाती ॥२१॥

मेंढक जो हैं बोलने पै आते।
संसारको सरपै हैं अठाले ॥२२॥

रक्षक जो बड़े हैं जैन मतके।
ढकने हैं दियो पै ढकते फिरते ॥२३॥

करते हैं वह यूँ जियोकी रक्षा।
ता जल न बुझे कोभी पतंगा ॥२४॥

है शुक्र गुजार तेरे बरसात।
अिन्साँसे लेके ता जमादात ॥२५॥

दुनियामें बहुत थी चाह तेरी।
सब देख रहे थे राह तेरी ॥२६॥

दरिया तुझ बिन सिसक रहे थे ।

और बन तेरी राह तक रहे थे ॥२७॥

दरियाओंमें तूने डाल दी जाँ ।

और तुझसे बनोको लग गयी शाँ ॥२८॥

जिन झिझोंमें कल थी धाक झुड़ती ।

मिलती नहीं आज थाह अुनकी ॥२९॥

दौलत जो ज़मीनमें थी मझफ़ी ।

आगे तेरे अुसने सब अुगल दी ॥३०॥

ये रैतके जिस ज़मीं पै अम्बार ।

है वीरबहोटियोंसे गुलनार ॥३१॥

ज़ोरों पै चढ़ा हुआ है पानी ।

मौजोंकी हैं सूरतें डरानी ॥३२॥

नावें कि हैं डगमगा रही हैं ।

मौजोंके थपेड़े आ रही हैं ॥३३॥

मल्लाहोंके अुड़ रहे हैं ओसाँ ।

बेड़ेका धुदा ही है निगहबाँ ॥३४॥

मँझधारकी रौ भी ज़ोरपर है ।

मछलीको भी जानका अतर है ॥३५॥

धुसरोकी पहेलियाँ

लूची अटारी पलंग बिछाओ, मैं सोओ मेरे सिरपर आयो ।
 पुल गयी अँधियाँ भयो अनन्द, ऐ सखी साजन ना सखी चन्द ॥
 १। एक सजन वह गहरा प्यारा, जासे मेरा घर अजियारा ।
 भोर भओ तब बिदा मैं किया, ऐ सखी साजन ना सखी दिया ॥
 वह आवे तब शादी होय, उस विन दूजा और न कोय ।
 मीठे लागे वाकै बोल, ऐ सखी साजन ना सखी ढोल ॥
 ॥ बधत-बे-बधत मोयँ वाकी आस, रातदिना वह रहवत पास ।
 मेरे मनको सब करत है काम, ऐ सखी साजन ना सखी राम ॥
 तन, मन, धनका है वह मालिक, वाने दिया मेरे गोदमें बालक ।
 बासे निकसत जीको काम, ऐ सखी साजन ना सखी राम ॥

हालीके शेर

२॥ जहाँमें हाली किसीपै अपने सिवा भरोसा न कीजियेगा ।
 यह भेद है अपनी ज़िन्दगीका बस इसकी चर्चा न कीजियेगा ॥
 हो लाख गैरोंका गैर कोओ न जानना उसको गैर हरगिज़ ।
 जो अपना साया भी हो तो उसको तसव्वुर अपना न कीजियेगा ॥
 २४। लगाव तुममें न लग जाहिद न दर्दे अल्फतकी आग जाहिद ।
 फिर और क्या कीजियेगा आखिर जो तर्के दुनिया न कीजियेगा ॥

*

*

*

तुझमें जोत औ शमा है किस बर्के आलम सोजकी !
जानो दिलसे तुझपै परवाना जो यूँ कुरवान है ॥

* * *

दिलमें हालीके रहे बाकी न बस अरमान कुछ ।
जीमें है कुछ अब अगर बाकी तो यह अरमान है ॥

* * *

मौजूद हुनर हों ज्ञातमें जिसकी हजार ।
बदजन न हो अब अउसमें गर हो दो चार ॥
ताअूसके पाये जिश्त पर करके नजर ।
कर हुस्तो जमालका न अउसके अनकार ॥

* * *

मुमकिन है कि हो जाय फरिश्ता, अिन्साँ ।
मुमकिन है बदीका न रहे अउसमें निशाँ ॥
मुमकिन तो है सब कुछ पै हकीकत है यही ।
अिन्साँ है अब तक वही करनुल-शैताँ ॥

* * *

ऐ वक्त ! बिगाड़का है सबसे चारा ।
पर तुझसे बिगड़नेका नहीं है यारा ॥
हो जाय गर अक तू हमारा साथी ।
फिर गुम नहीं, फिर जाय जमाना सारा ॥

* * *

अहसानके है गर सिलेकी छ्वाहिश तुमको ।
 तो अिससे यह बेहतर है कि अहसाँ न करो ॥
 करते हो गर अहसान तो कर दो अुसे आम ।
 अितना कि जहाँमें कोअी ममनून न हो ॥

*

*

*

जैसा नज़र आता हूँ न अैसा हूँ मैं ।
 और जैसा समझता हूँ न वैसा हूँ मैं ॥
 अपनेसे मी अैब हूँ छिपाता अपने ।
 बस मुझको ही है मालूम है जैसा हूँ मैं ॥

*

*

*

आती नहीं है शर्म तुझे अै धुदा-परस्त !
 दिलमें कहीं निशाँ नहीं तेरे यकीनका ॥१॥
 नीमें तेरे हज़ारों गुज़रते हैं बसबसे ।
 होती नहीं कबूल तेरी अिक अगर दुआ ॥२॥
 तुझसे हज़ार मर्तबा बेहतर है बुतपरस्त ।
 जिसका यकी है तेरे यकीसे कहीं सिवा ॥३॥
 वह मोंगता बुतोसे मुरादे है अुम्रभर ।
 गो हाजत अुसकी अुनसे हुअी है न हो रवा ॥४॥
 आता नहीं यकीनमें अुसके कमी कुसूर ।
 अुम्मीद अुसकी रोजे फिज़ है और अिल्तजा ॥५॥
 गो बन्दअे गरज़ है वह राजी रज़ापै है ।
 वह है, कि यह बन्दगी अै बन्दअे धुदा ॥६॥

अकबर अिलाहाबादीके शेर

रोना है तो इसीका, कोअी नहीं किसीका ।
 दुनिया है और मतलब, मतलब है और अपना ॥
 अय बिरहमन, हमारा तेरा है एक आलम ।
 हम छत्राव देखते हैं, तू देखता है सपना ॥

* * *

जी अुठा मरनेसे वो, जिसकी दापर थी नजर ।
 जिसने दुनिया ही को पाया था, वह सब ओके मरा ॥

* * *

करेगा कद्र जो दुनियामें अपने आनेकी ।
 अुसीकी जानको लड़गत मिलेगी जानेकी ॥

* * *

मजा भी आता है दुनियासे दिल लगानेमें ।
 सजा भी मिलती है दुनियासे दिल लगानेकी ॥

* * *

मेरी ना-कामयाबीकी कोअी हद हो नहीं सकती ।
 सदाकत चल नहीं सकती, अुशामद हो नहीं सकती ॥

* * *

हुकूमत अुसकी अुसीकी मर्जी, अुसीके सब काम और धंदे ।
 कहाँके अिंग्लिश, कहाँके नेटिव, अुदाकी दुनिया, अुदाके बन्दे ॥

* * *

लोग कहते हैं कि हैं आप निहायत काबिल ।
मैं इसी सोचों रहता हूँ कि किस काबिल हूँ ॥

* * *

जो मिल गया वो जाना, दाताका नाम जपना ।
असके सिवा बताऊँ, क्या तुमको काम अपना ॥

* * *

कहा बुकरातसे दुनियामें क्यों आया तू अय दाना ।
कहा असने कि मैं लाया गया मुझको पड़ा आना ॥
कहा—क्यों कर बसर की अुम्र ? बोला साथ हैरतके ।
कहा क्या जाना ? बोला—कुछ नहीं जाना, यही जाना ॥

*

गफलतकी हँसीसे आह भरना ।
अफआले मुज़िरसे कुछ न करना अच्छा ॥
अकबरने सुना है अहले गैरतसे यही ।
जीना ज़िल्लतसे हो तो मरना अच्छा ॥

*

जुदाअिने 'मैं' बनाया मुझको, जुदा न होता तो मैं न होता ।
धुदाकी हस्ती है मुझसे साबित, धुदा न होता तो मैं न होता ॥

* * *

हम अुर्दूको अरबी क्यों न करें, अुर्दूको वो भाषा क्यों न करें ।
आगड़ेके लिये अश्वबारोंमें, मज़मून तराशा क्यों न करें ॥

आपसमें अदावत कुछ भी नहीं, लेकिन एक अभाड़ा कायम है ।
जब अिससे फलकका दिल बहले, हम लोग तमाशा क्यों न करें ॥

*

कहता हूँ हिन्दू वो मुसलमानोंसे यही ।
अपनी अपनी रविश पै तुम नेक रहो ॥
लाठी है हवाये दहर पानी बन जाओ ।
मौजोंकी तरह लड़ो मगर अेक रहो ॥

हे मातृभूमि !

तेरी रजमें लोट लोटकर बड़े हुअे हैं,
घुटनोंके बल सरक सरककर अड़े हुअे हैं ॥
परमहंस सम बाल्यकालमें सब सुअ पाये,
तेरे कारण धूल-भरे हीरे कहलाये ॥
पाकर तुझसे सभी सुअोंको हमने भोगा,
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा ॥
तेरी ही यह देह तुझीसे बनी हुअी है,
बस तेरी ही सुजस-वारिसे सनी हुअी है ॥
जिस पृथ्वीमें मिले हमारे पूर्वज सारे,
अुससे हे भगवान ! कभी हम रहें न न्यारे ॥

छोट लोटकर यही हृदयको शान्त करेंगे,

असमें मिलते समय मृत्युसे नहीं डरेंगे ॥

तू पालित यह देह तुझीपर हम वारेंगे,

गौरव तेरे सुत होनेका हम धारेंगे ॥

★

सारे जहाँसे अच्छा

सारे जहाँसे अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा ।

हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुलिस्ताँ हमारा ॥

गुरबतमें हों अगर हम, रहता है दिल वतनमें ।

समझो वहीं हमें भी दिल हो जहाँ हमारा ॥

परबत वह सबसे ऊँचा हमसाया आसमाँका ।

वह सन्तरी हमारा, वह पासबाँ हमारा ॥

गोदीमें छेड़ती हैं इसकी हजारों नदियाँ ।

गुलशन है जिनके दमसे रश्के-जिनाँ हमारा ॥

अप आबखूदे-गंगा ! वह दिन है याद तुझको ।

अुतरा तेरे किनारे जब कारवाँ हमारा ॥

मज़हब नहीं सिखाता आपसमें बैर रचना ।

हिन्दी है हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा ॥

यूनानो मिसरो रूमा सब मिट गये जहाँसे ।

अबतक मगर है बाकी नामो निशाँ हमारा ॥

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे ज़माँ हमारा ॥

‘अक्बाल’ को भी महरम अपना नहीं जहाँमें ।
मालूम क्या किसीको दर्द निहाँ हमारा ॥

★
★

कौमी गीत

दावा है हर आन. हमारा ।
सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥

जंगल और गुलज़ार हमारे, दरिया और कुहसार हमारे,
कूचे और बाज़ार हमारे, फ़ूल हमारे धार हमारे,
हर घर हर मैदान हमारा ।
सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥

गो नहीं हममें फौजी कूबत, फिर भी बहुत है दिलमें हिम्मत,
और हमारे साथ है कुदरत, अब को भी ताकत को भी हुकूमत,
रोक तो दे तूफ़ान हमारा ।
सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥

हमसे भारत की रौनक है, आज़ादी दिन रात सबक है,
अपनी धुनक है अपनी शफ़क है, हर ज़र्रेपर अपना हक है,
भेत अपने दहकान हमारा ।
सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥

हिन्दू का मालिक हर हिन्दी हो, सिर्फ यहाँ अिक कौम बसी हो,
 बार न पाओ छ्वाह कोअी हो, चाहे वह धुद अपनी ही धुदी हो,
 देख जरा अरमान हमारा ।
 सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥

★
 ★★

नया शिवाला

सच कह-दूँ औ बिरहमन ! गर तू बुरा न माने,
 तेरे सनमकदोंके बुत हो गये पुराने ॥
 अपनोसे बैर रखना तूने बुतोंसे सीधा,
 जंगो जदल सिआया वाअजको भी धुदाने ॥
 तंग आके मैने आधिर दैरोहरमको छोड़ा,
 वाअजका वाज छोड़ा, छोड़े तारे फसाने ॥
 पत्थरकी मूरतोंमें समझा है तू धुदा है,
 आके वतनका मुझको हर जरा देवता है ॥
 आ, गैरियतके पदे अिक बार फिर अुठा दें,
 बिछड़ोंको फिर मिला दें, नकशे दुआ मिला दें ॥
 सूनी पड़ी हुअी है मुदतसे दिलकी बस्ती,
 आ, अिक नया शिवाला अिस देसमें बना दें ॥
 दुनियाके तीरथोंसे अूँचा हो अपना तीरथ,
 दामने आस्मोसे असका कवस मिला दें ॥

हर सुबह अठके गाये मन्तर वह भीठे मीठे,
 सारे पुजारियोंको मय पीतकी पिला दे ॥
 शक्ती भी शान्ती भी भगतोंके गीतमें है,
 धरतीके बासियोंकी मुकती पिरितमें है ॥

★
 ★★

कुछ शेर

तुम्हारी तहजीब अपने अंजरसे आप ही धुदकुशी करेगी ।
 जो शास्त्रे नाजुकपै आशियाना बनेगा नापायदार होगा ॥

* * *

धुदांके आशिक तो हैं हजारों बनोंमें फिरते हैं मारे मारे ।
 मैं अुसका बन्दा बनूँगा जिसको धुदाके बन्दोंसे प्यार होगा ॥

* * *

वो चीज़, नाम है जिसका जहाँमें आज्ञाश्री ।
 सुनी ज़रूर है देधी कहीं नहीं मैंने ॥
 धुदा तो मिलता है अिन्सान ही नहीं मिलता ।
 य' चीज़ वह है कि देधी कहीं कहीं मैंने ॥

* * *

हुस्ने-अजलकी पैदा हर चीज़में झलक है ।
 अिन्साँमें वह सखुन है गुंवेमें वह चटक है ॥

यह चाँद आसमोंका शायरका दिल है गोया ।
 वॉ चाँदनी है जो कुछ यॉ दर्दकी कसक है ॥
 कसरतमें हो गया है वहदतका राज मधुफी ।
 जुगनूमें जो चमक है वह फूलमें मधक है ॥

*

*

*

वतनकी फिक्र कर नादों ! मुसीबत आनेवाली है ।
 तेरी बर्बादियोंके मश्चरे हैं आसमानोंमें ॥
 न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तोंवालो ।
 तुम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानोंमें ॥

**

स्वयमागत

तेरे घरके द्वार बहुत हैं किससे होकर आऊँ मैं ?
 सब द्वारोंपर भीड़ बड़ी है कैसे भीतर जाऊँ मैं ?

द्वारपाल भय दिजलाते हैं,

कुछ ही जन जाने पाते हैं,

शेष सभी धक्के खाते हैं,

कैसे घुसने पाऊँ मैं ?

तेरे घरके द्वार बहुत हैं, किससे होकर आऊँ मैं ?

मुझमें सभी दैन्य दूषण है,

न तो वस्त्र है, न विभूषण है,

लज्जित किंतु यहाँ पूषण है,
 अपना क्या दिखलाऊँ मैं ?
 तेरे घरके द्वार बहुत हैं, किससे होकर आऊँ मैं ?
 मुझमें तेरा आदर्पण है,
 किन्तु यहाँ घन संवर्षण है,
 अिसीलिये दुर्धर वर्षण है,
 क्योंकिर तुझे बुलाऊँ मैं ?
 तेरे घरके द्वार बहुत हैं, किससे होकर आऊँ मैं ?
 तेरी विभव कल्पना करके,
 उसके वर्णनसे मन भरके,
 भूल रहे हैं जन बाहरके,
 कैसे तुझे बुलाऊँ मैं ?
 तेरे घरके द्वार बहुत हैं, किससे होकर आऊँ मैं ?
 बीत चुकी है वेला सारी,
 आयी किन्तु न मेरी बाती,
 करूँ कुटीकी अब तैयारी,
 वहीं बैठ पछताऊँ मैं ?
 तेरे घरके द्वार बहुत हैं, किससे होकर आऊँ मैं ?
 कुटी ओछ भीतर आता हूँ,
 तो वैसा ही रह जाता हूँ,
 तुमको यह कहते पाता हूँ,

“अतिथि ! कहों, क्या लाऊँ मैं ? ”
तेरे घरके द्वार बहुत हैं, किससे होकर आऊँ मैं ?

सीखो

फूलोंसे नित हँसना सीखो, भौंरोंसे नित गाना,
तरुकी झुकी डालियोंसे नित सीखो शीश झुकाना,
सीख हवाके झोंकोसे लो हिलना नित्य हिलाना,
दूध तथा पानीसे सीखो मिलना और मिलाना ॥

सूरजकी किरणोंसे सीखो जगना और जगाना,
लता और पेड़ोंसे सीखो, सबको गले लगाना,
वर्षाकी बून्दोंसे सीखो सबसे प्रेम बढ़ाना,
मेहन्दीसे सीखो सब ही पर अपना रंग जमाना ॥

मछलीसे सीखो, स्वदेशके लिये तड़पकर मरना,
पतझड़के पेंड़ोंसे सीखो, दुःखमें धीरज धरना,
दीपकसे सीखो, जितना हो सके अन्धेरा हरना,
पृथ्वीसे सीखो प्राणीकी सच्ची सेवा करना ॥

जलधारासे सीखो निर्भय जीवन-पथमें बढ़ना,
और धुँसे सीखो हरदम ऊँचे ही पर चढ़ना,
सत्पुरुषोंके जीवनसे सीखो चरित्र निज गर्दना,
तथा प्रेमसे सीखो मित्रो ! सत्पक्षोंका पढ़ना ॥

हो शंखनाद या हो अज्ञान

दोनों को भूख सताती है हिन्दू हो या हो मुसलमान ।
 दोनों पर आफत आती है हिन्दू हो या हो मुसलमान ॥
 दोनों मरते हैं एक तरह, दोनों जीते हैं एक तरह ।
 फिर जिस झगड़े का मतलब क्या ! हम हिन्दू तुम मुसलमान ॥
 दोनों हैं फँसे गुजामी में दोनों काले कहलाते हैं ।
 अपमान मान सब एक तरह दोनों, विदेश में पाते हैं ॥
 दोनों को जिसमें रहना है दो देश न वह हिन्दोस्तान ।
 फिर जिस झगड़े का मतलब क्या ! हम हिन्दू तुम मुसलमान ॥
 मन्दिर जा सकता है तोड़ा, मस्जिद जा सकती है तोड़ी ।
 दोनों ही हैं मिट्टी पत्थर समझो हो अकल अगर थोड़ी ॥
 यदि आग बंदगी दंगे की दोनों ही होंगे परेशान ।
 फिर जिस झगड़े का मतलब क्या ! हम हिन्दू तुम मुसलमान ॥
 जिस राहे-धुना में लड़ते हैं, उसमें लड़ना है सधत मना ।
 अीश्वर को जिसने जान लिया उसको क्या ग़ैर व क्या अपना ॥
 यदि हिन्दू सच्चे हिन्दू हैं, यदि मुसलमान हैं मुसलमान ।
 तो प्रभु को शीश झुका देंगे, हो शंखनाद या हो अज्ञान ॥

हिन्दू-मुसलमाँ

हिन्दकी आनबान हैं दोनों, तन है अिक और जान हैं दोनों ॥
 भल्क अिसपर ज़रा निगाह करे, अपने भालिककी शान हैं दोनों ॥
 बार अपना अुठा नहीं सकते, अिस क़दर नातवान हैं दोनों ॥
 फ़र्ज़ अनपर है अिसकी रअवाली, मुल्कके पासवान हैं दोनों ॥
 न हरम न अब वह बुतझाना, टूटे फूटे मकान हैं दोनों ॥
 तीर औरोंपे क्या लगायेंगे, धुद यह अुतरी कमान हैं दोनों ॥
 फिर पढ़ो “नूह” तुम वही मिसरा,

हिन्दकी आनबान हैं दोनों ॥

★ ★

ग़ालिब के शेर

हविसको है निशाते कार क्या क्या ?
 न हो मरना तो जीनेका मज़ा क्या ?

*

*

*

अिशारते क़तरा है दरियामें फना हो जाना ।

दर्दका हदसे गुज़रना है दवा हो जाना ॥

*

*

*

रंजसे धूगर हुआ अिन्साँ तो मिट जाता है रंज ।

मुश्किलें मुझपर पड़ीं अितनी कि आसाँ हो गयीं ॥

*

*

*

सुनके देखेसे जो आ जाती है मुँहपर रौनक ।
 वो समझते हैं कि बीमारका हाल अच्छा है ॥
 कतरअ दरियामें जो मिल जाय तो दरिया हो जाय ।
 काम अच्छा है वो जिसका कि मआल अच्छा है ॥
 हमको मालूम है जन्नतकी हकीकत लेकिन ।
 दिलके धुश रहनेको 'ग़ालिब' य' धयाल अच्छा है ॥

*

*

'ग़ालिब' बुरा न मान जो वाअज़ बुरा कहे ।
 ऐसा भी कोअी है कि सब अच्छा कहें जिसे ॥

*

*

अस सादगीपै कौन न मर जाय ऐ फ़ुदा ।
 लड़ते हैं मगर हाथमें तलवार भी नहीं ॥

 ★
 ★★

चरखा गीत

चला हमारा अपना चरखा, चरखा मनका मीत,
 गुँज अुठा उसके मन-मनमें जन-जनका संगीत ।

धसक रही धरती धक्कोंमें,

पुतलीघरके अुन चक्कोंमें,

बन्ध कर लोहके लच्छोंमें,

वहाँ समी भयभीत ।

यहाँ फूट है सबकी सबसे, जन जनकी है जीत,
चला हमारा अपना चरखा, चरखा मनका मीत ॥१॥

सीधे सच्चे अिस तकुअेका पक्का पतला तार,
बढ़ बढ़कर ले सकता है यह सात समन्दर पार ।

लोट पाट करके औरोंमें,
जले फुँके अुजड़े ठौरोंमें,
बन बैठे जो सर मोरोंमें,
भय अुसका निस्सार ।

यहाँ हमारे अिस चरअेमें सकल सुधी संसार,
सीधे सच्चे अिस तकुअेका पक्का पतला तार ॥२॥

अिस घर-घर-घरमें आती है अुन अेतोंकी याद,
अुमड़-धुमड़ आया था जिनपर सावनका अुन्माद ।

अेत अेतमें साअ भरी थी,
आगेकी अभिलाष भरी थी,
धरती चारों ओर हरी थी,
लायी थी सम्वाद ।

जुग जुगसे है अन्न-वसनकी अमिट यहाँ मरयाद,
अिस घर-घर-घरमें आती है अुन अेतोंकी याद ॥२॥



खादी गीत

आदीके धागे धागेमें,
अपनेपनका अभिमान भरा,
माताका अिसमें मान भरा,
अन्यायीका अपमान भरा,

आदीके रेशे रेशेमें,
अपने भाभीका प्यार भरा,
मा-बहनोंका सत्कार भरा,
बच्चोंका मधुर दुलार भरा ।

आदीकी रजत चंद्रिका जब,
आकर तनपर मुसकाती है,
तब नव-जीवनकी नयी ज्योति,
अन्तस्तलमें जग जाती है ।

आदीसे दीन-विपन्नोकी,
भुत्तप्त, अुसास निकलती है,
जिससे मानव क्या पत्थरकी—
भी छाती कड़ी पिघलती है ।

आदीमें कितने ही दलितोंके,

दग्ध हृदयकी याद छिपी,
कितनोंकी कसक-कराह छिपी,
कितनोंकी आहत आह छिपी ।

आदीमें कितने ही नंगों,
 मिथमंगोंकी है आस छिपी,
 कितनोंकी अिसमें भूख छिपी,
 कितनोंकी अिसमें प्यास छिपी ।

आदी तो कोअी लड़नेका,
 है जोशीला रणगान नहीं,
 आदी है तीर-कमान नहीं,
 आदी है अंग-कृपाण नहीं ।

आदीको देख देख तो मी,
 दुश्मनका दल थहराता है,
 आदीका झण्डा सत्य शुभ्र,
 अब समी ओर फहराता है ।

आदीकी गंगा जब सिरसे,
 पैरोंतक बह लहराती है,
 जीवनके कोने कोनेकी,
 सब सब कालिअ धुल जाती है ।

आदीका ताज चाँद-सा जब,
 मस्तकपर चमक दिआता है,
 कितने ही अत्याचार-ग्रस्त,
 दीनोंके त्रास मिटाता है ।

आदा हो भर भर देश-प्रेमका,
 प्याला मधुर पिलायेगी,
 आदी ही दे दे संजीवन,
 मुदोंको पुनः जिलायेगी ।

आदी ही बढ़, चरणोंपर पड़,
 नूपुर-सी लिपट मनायेगी,
 आदी ही भारतसे रूठी,
 आज़ादीको घर लायेगी ।

★
 ★★

मातृभूमिके सैनिक हैं

हम मातृभूमिके सैनिक हैं,
 आज़ादीके मतवाले हैं,
 बलिवेदीपर हँस-हँस करके,
 निज शीश चढ़ानेवाले हैं ।

कैसरिया बाना पहन लिया,
 तब फिर प्राणोंका मोह कहाँ !
 जब बने देशके सन्यासी,
 नारी-बन्धोंका छोह कहाँ !

जननीके वीर पुजारी हैं,
 सर्वस्व छटानेवाले हैं,
 हम मातृभूमिके सैनिक हैं,
 आज़ादीके मतवाले हैं ।

अब देश-प्रेमकी रंगतमें,
 रंग गया हमारा यह जीवन,
 उसके ही लिये समर्पित है,
 सब कुछ अपना यह तन-मन-धन ।

आगेको बड़ा चरण रणमें,
 पीछे न हटानेवाले हैं,
 हम मातृभूमिके सैनिक हैं,
 आज़ादीके मतवाले हैं ।

सन्तान शूर-वीरोंकी हैं,
 हम दास नहीं कहलायेंगे,
 या हम स्वतंत्र हो जायेंगे,
 या रणमें मर मिट जायेंगे ।

हम अमर शहीदोंकी टोलीमें,
 नाम लिखानेवाले हैं,
 हम मातृभूमिके सैनिक हैं,
 आज़ादीके मतवाले हैं ।

बेटीकी विदा

प्यारी बहिन, सौंपती हूँ मैं अपना तुम्हें अज़ाना,
है अिसपर अधिनार तुम्हारै वेटेका मनमाना ।
रक्त, मांस, हड्डी, तन मेरा है यह बेटी प्यारी,
करो अिसे स्वीकार, हुआ यह अब सब भौंति तुम्हारी ॥ १ ॥

पूजे कभी देवता हमने तब है अिसको पाया,
प्राण समान पालकर अिसको अितना बड़ा बनाया ।
आत्मा ही यह आज हमारी हमसे बिछुड़ रही है,
समझाती हूँ जीको तो भी धरता धीर नहीं है ॥ २ ॥

बहिन ढिठाओ माताकी तुम मनमें नेक न धरियो,
अिस कोमल बिरवाकी रक्षा बड़े चावसे करियो ।
है यह नम्र मेमनेसे भी, भीरु मृगीसे बढ़कर,
कड़ी बात या चितवनसे यह कैप जाती है थर थर ॥ ३ ॥

हे गँवार यह भोली, अिसने नहीं शिष्टता जानी,
तिसपर भी गुरुजनकी आज्ञा बड़े प्रेमसे मानी ।
साँचेमें तुम अिसे ढालियो, कभी न यह तड़केगी,
बहिन सिआनेसे चतुराओ बेटी सीध सकेगी ॥ ४ ॥

यह गुड़िया, यह लक्ष्मी अपनी, जीवन मूल दुलारी,
हृदय धामकर करती हूँ मैं अब आँजोंसे न्यारी ।

माता-नेह सोच तुम मनमें दुःख मेरा अनुमानो,
ममता छिपती नहीं छिपाये, बहिन सत्य यह जानो ॥ ५ ॥

असका रूप निहार दिव्य मैं पल पल सुख पाती थी,
गान-समान सुरीली बोली असकी मन भाती थी।
बहिन तुम्हें भी ये सब बातें जान पड़ेगी आगे,
अपने नैन रञ्जोगी असपर जब तुम भी अनुरागे ॥ ६ ॥

असकी मंद हँसीसे मेरा मन अति सुख पाता था,
कठिन घाव भी जिससे दुःखका अच्छा हो जाता था।
असे अुदास देख आँझोंमें भर आता था पानी,
छिपी नहीं है बहिन, किसीसे माता-प्रेम कहानी ॥ ७ ॥

बड़ी लालसा भी निज मनकी असने नहीं बतायी,
कर संकोच कठिन पीड़ा भी अपनी सदा छिपायी।
तो भी मैं सब लज लेती थी असके बिना कहे ही,
यों ही तुम असकी सब बातें लभियो, बहिन सनेही ॥ ८ ॥

अपना मांस-पिंड देती हूँ मैं तनसे कर न्यारा,
हे यह जीवन मेरे जीका, आँझोंका है तारा।
अस अनाथ बच्चीका पालन माता सम तुम कीजो,
मेरी अस बलहीन दशामें बहिन, बाँह गह लीजो ॥ ९ ॥

करो बहिन, स्वीकार दयाकर मेरी अितनी बिनती,
बच्चोंमें अपने तुम करियो अस बेटीकी गिनती।

दीजे बहिन, भरोसा मुझको हाथ हाथमें देकर,
 "बेटी-सम पालेंगी इसको हम माता-सम होकर" ॥१०॥

मेरी ये आँखें पीती थीं नित जो रूप मनोहर,
 क्या उसके दर्शनका मुझको फिर न मिलेगा अवसर ?
 जिस बोलीसे धीरे धीरे असे बुलाती थी मैं,
 क्या वह भी अब मूक रहेगी रख जीकी जी ही मैं ॥११॥

हा मेरी अनमोल लाडली ! प्राणाधार दुलारी !
 क्या तू मुझे नहीं समझेगी अब अपनी महतारी ?
 तुझे नयी माता मिलती है, मैं तुमको छोती हूँ,
 यही सोचकर सुझमें तेरे, बेटी, मैं रोती हूँ ॥१२॥

हाय ! आजसे हुआ हमारा यह घर भरा अँधेरा,
 होकर निपट निरास न क्यों अब हृदय फटेगा मेरा ?
 अब मेरे इस सूने घरको अजाला कौन करेगी ?
 कौन मधुर बातोंसे मेरा रीता हृदय भरेगी ॥१३॥

कौन सुरीली बीन बजाकर मधुर गीत गावेगी ?
 घरमें कौन लड़कियाँ छोटी न्योत न्योत लावेगी ?
 सखियोंके संग कौन आयगी, खेलेगी, झूलेगी ?
 किसको सुन रामायण पढ़ते यह छाती फूलेगी ॥१४॥

हा बेटी ! हा गुड़िया मेरी ! हा मेरी सुकुमारी !
 तेरे बिना हृदय यह मेरा पावेगा दुःख भागी !
 केवल देव दयामय जो दुःख लख सकता है जनका,
 वही धीरे-धीरे, दूर करेगा संकट मेरे मनका ॥१५॥

आँकर वहाँ दूर, हे बेटी, मुझे भूल मत जाना,
 कभी कभी इस दुनियाकी भी सुध निज मनमें लाना ।
 रो मत, बेटी ! जा अपने घर संग नयी माताके,
 लीजे बहिन, असे अब, देती हूँ मैं सीस नवाके ॥१६॥

★★

दशहरा

आ गया प्यारा दशहरा, छा गया अत्साह बल ।
 मातृ-पूजा, शक्ति-पूजा, वीर-पूजा है निमल ॥
 हिन्दमें यह हिन्दुओंका विजय-अुत्सव है ललाम ।
 शरद्की इस सुअृतुमें है अङ्ग-पूजा धाम धाम ॥
 दिखने लगे अंजन यहाँ, रहने लगे चकवा अशोक ।
 चल पड़े योगी यती मगकी मिटी सब रोक टोक ॥
 भरने लगे बाजार हैं, छुलने लगे व्यापार द्वार ।
 सजने लगे सेना नृपति बजने लगे बाजे अपार ॥
 यह दशहरा कषत्रियोंका प्राण जीवन पर्व है ।
 हिन्दके अतिहासमें इस पर्वका अति गर्व है ॥
 वीर पुरुषोंको यही संजीवनीका काम दे ।
 जीत दे फिर कीर्ति दे फिर मान दे धन धाम दे ॥
 थी विजय दशमी यही जब रामने दल साजकर ।
 गिरि प्रवर्षणसे चढ़ाओ की थी लंका राजपर ॥

मार रावणको वहाँ अुद्धार सीताका किया ।
 और लंकाका विभीषणको तिलक था दे दिया ॥
 उस समयसे इस दशहरेका बड़ा सम्मान है ।
 मान गुणका यह प्रवर्तक कषत्रियोंका प्राण है ॥
 आज करते हैं विजयकी कामना सब वीरवर ।
 बाँचते हैं दृष्टि कर गज अश्व दल हथियारपर ॥
 श्रेय विजयासे भरे अितिहासके बहु पत्र हैं ।
 आज भी प्रतिविम्ब उसका देखते हम अत्र हैं ॥
 जो सबकु लेना हमें उससे अुचित लेते नहीं ।
 स्वार्थ-पशु-बलि त्यागकी तलवारसे देते नहीं ॥
 अिन्द्रियोंकी वासना ही है असुर, शंका नहीं ।
 ज्ञान-शरसे जीतते हैं लोभकी लंका नहीं ॥
 हन्त, जो कुविचार-रावण है उसे तजते नहीं ।
 क्या कहें, सुविचार श्रीवर रामको भजते नहीं ॥
 नाश कर कुविचारका सद्बुद्धि सीता लभिये ।
 नृप विभीषणकी तरह संतोषको अपनाभिये ॥
 शान्त हो प्यारी अवध, फिर राज्य उसका कीजिये ।
 'मीर, विजयाकी विजयका इस तरह यश लीजिये ॥



गिरजासे घंटेकी टन् टन्

मन्दिरसे शंभोंकी ताने,
मस्जिदसे पान्बद अज्ञाने,
बुठाकर नित्य किया करती हैं,

अपने भक्तोंका आवाहन
गिरजासे घण्टेकी टन् टन् ॥

मेरा मन्दिर था, प्रतिमा थी,
मनमें पूजाकी महिमा थी,
किन्तु निरभ्र गगनसे गिरकर,

वज्र गया कर सबका छण्डन
गिरजासे घण्टेकी टन् टन् ॥

जब ये पावन ध्वनियाँ आतीं,
शीश झुकाने दुनिया जातीं,
अपनेसे पूछा करता मैं,

कहाँ कहाँ मैं किसका पूजन ?
गिरजासे घण्टेकी टन् टन् ॥



यह किसका कंकाल पड़ा है

भरी जवानीमें ही अिसके चेहरेपर पड़ गयीं झुर्रियाँ,
पीव पिचपिचाती शरीरमें, भनन् भगन् कर रहीं मक्खियाँ,

क्या मानव अिस तरह निराश्रित,
धरतीपर बेहाल पड़ा है,

यह किसका कंकाल पड़ा है ?

यह किसके भविष्यकी आशा, किस दुधियाका अेक सहारा,
किस अभागिनीका सुहाग यह, किस मृग-नयनीका दृगतारा,

किसकी गोदीकी शोभा यह,
किस माओका लाल पड़ा है ?

यह किसका कंकाल पड़ा है ?

किसी दैवका है प्रकोप यह, या अजगरने चूस लिया है,
या मानवक्री दानवताने अिसका जीवन छूट लिया है,

या पूँजीवादी समाजके,
जुल्मोंका जंजाल पड़ा है,

यह किसका कंकाल पड़ा है ?

पापी पेट पालनेमें ही स्नेह सरसता छली गयी है,
छातीपर पत्थर धर माँ भी अभी कामपर चली गयी है,

जिसका स्नेह-टाड़ला पथपर,
दीन दुखी पामाल पड़ा है,

यह किसका कंकाल पड़ा है ?

अफ़ कितना भयावना लगता सजल पुतलियाँ फिरा रहा है,
आगेके दो दाँत निकाले यह हम सबको बिरा रहा है,

निश्चय यह शोषक वाँका,
निर प्रतिशोधी काल पड़ा है,
यह किसका कंकाल पड़ा है ?

जौकके शेर

जो फ़रिश्ते करते हैं कर सकता है भिन्सान भी ।
पर फ़रिश्तोंसे न हो जो काम है भिन्सानका ॥

* * *

सफ़े हस्ती कर रहा हूँ बस्लकी अुर्मदपर ।
बे निशाँ हो लूँ तो फिर नामो निशाँ पैदा करूँ ॥

* * *

कहा पतंगने यह दारे शमापर चढ़कर ।
अजब मज़ा है जो मर ले किसीके सर चढ़कर ॥

* * *

भूल मत अिल्मे किताबी पर कि आधिर कब तलक ।
नात्र कागज़की बहे औ तिफ़ले कोदन आवमें ॥

* * *

कैसा मोसिन कैसा काफिर कौन है सूफी कैसा रिन्द ।
सारे बशर हैं बन्दे हकके सारे शरके झगड़े हैं ॥

*

*

*

बजा कहे जिसे आलम असे बजा समझो ।
जुवाने धलकको नक्कारअे छुदा समझो ॥

*

*

*

तू जान है हमारी और जान है तो सब कुछ ।
अमीमानकी कहेंगे, अमीमान है तो सब कुछ ॥

*

*

*

अगर यह जानते चुन चुनके हमको तोड़ेंगे ।
तो गुल कभी न तमन्नाये रंगो करते ॥

*

*

*

गुज़रती है मजेमें ज़िन्दगी गुफ़लत शआरीसे ।
मेरे नज़दीक बेहोशी है बेहतर होशियारीसे ॥

*

*

*

क्या वह दुनिया जिसमें कोशिश हो न दीके वास्ते ।
वास्ते बाँके भी कुछ या सब यहाँके वास्ते ॥

धूँके दरिया बह गये आलम तहो बाला हुअे ।
अै सिकन्दर, किसलिये ? दो गज़ ज़मीके वास्ते ॥

*

*

*

बेकरारीका सबब हर कामकी अुम्मीद है ।
नाअुमेदीसे मगर आरामकी अुम्मीद है ॥

*

*

*

दर्द दिलसे लोटता हूँ मेरा किसको दर्द है ।
मैं हूँ लफ़्फ़े दर्द जिस पहलूसे देखो दर्द है ॥

*

*

*

बन्द न बोले ज़ेरे गर्दू गर कोअी मेरी सुने ।
है यह गुम्बदकी सदा जैसी कहे वैसी सुने ॥

*

*

*

गुल भला कुछ तो बहारें औ सबा दिअला गये ।
हसरत अुन गुचेंपै है जो बिन अिले मुरझा गये ॥

*

*

*

कहीं तुझको न पाया गचें हमने यक जहाँ ढूँढ़ा ।
फिर आखिर दिलहीमें देआ बगलहीमेंसे तू निकला ॥

*

*

*

दुनियाके अलम ज़ौक भुठा जायेंगे ।
हम क्या कहें क्या आये थे क्या जायेंगे ॥

*

*

*

जब आये थे रोते हुअे आप आये थे ।
अब जायेंगे औरोंको रुला जायेंगे ॥

*

*

*

हम जानते थे अिल्मसे कुछ जानेगे ।
जाना तो यह जाना कि न जाना कुछ भी ॥

★★
★

वसन्त

हैं फूल सब रंगीले,
हैं सारे पीले पीले,
यह धुशनुमा है मंजूर,
हम क्यों न मुस्कराये,
आयी वसन्त की अृत ॥

धानी हरअक शै है,
है मस्त जो भी लय है,
आया है ध्रुव मौसम,
हम क्यों न गुनगुनायें,
आयी वसन्तकी अृत ॥

गुलशनका पत्ता पत्ता
दिलकश है और दिल अफजा,
हर गुंचा कह रहा है,
आओ लहकके गायें,
आयी वसन्तकी अृत ॥

आयी वसन्तकी अृत,
क्यों हम न झूम जायें ॥

★★
★

हवा चली

होनेको आयी सुबह तो ठण्डी हवा चली,
क्या धीमी धीमी चालसे यह धुरा-अदा चली ॥

लहरा दिया है धेतको हिलती हैं बालियाँ,
पौधे भी झूमते हैं लचकती हैं डालियाँ ॥

फुलवारियोंमें ताज़ा शिगूफ़ा झिला चली,
सोया हुआ था सब्ज़ा उसे तो ज़गा चली ॥

सरसब्ज़ हो दरख्त न बाग़ोंमें तुझ बग़ैर,
तेरे ही दमकदमसे है भायी चमनकी सैर ॥

पड़ जाय अिस ज़हानमें तेरी अगर कमी,
चौपाया कोभी ज़िन्दा बचे औ न आदमी ॥

चिड़ियोंको यह अुड़ानकी ताकत कहाँ रहे,
फिर 'कायँ कायँ' हो न 'गुटरगूँ' न 'चहचहे' ॥

बन्दोंको चाहिये कि करें बन्दगी अदा,
अुसकी कि जिसके हुक्मसे चलती है यह हवा ॥

हाय नहीं यह देखा जाता

हन्त भूख मानव बैठा गोबरसे दाने बीन रहा है,
और झपट कुत्तेके मुँहसे जूठी रोटी छीन रहा है,

साँस न बाहर मीनर जाती,
और कलेजा मुँहको आता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

देख रहा आँखोंके आगे कितने जर्जर पोड़ित ऐसे,
भूख प्याससे अूब माँगते जो विष छानेको ही पैसे,

और नहीं वह भी मिलता है,
मानव चीख चीख चिल्लाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

भाग्य छूटनेवालेको वह धर्मवान भगवान बनाता,
जीवन हाय हराम कर दिया उसकी जय जयकार मनाता,

जिसने सब कुछ छीन लिया,
उसको ही वह दाता बतलाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

निर्मम शोषकके ही सम्मुख अपने हाथ पसारा करता,
शेष न जिसमें दया-दया कुछ उससे रो रो आँहें भरता,

बलि-बकरे-सा क्रूर कसाओ-
को अपने पहचान न पाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

टेक टेककर टेढ़ी लकड़ी पथपर घूमा करता अंधा,
सुबह शाम चिल्लाया करता 'बाबा, दुनिया गोरछधंधा,'

आली हाथ लौटता जब घर,
किस्मत ठोक-ठोक पछताता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

मानवकी छातीपर बैठा झूम रहा था नवमतवाला,
सींग पूँछसे हीन पशु बन भींच रहा है रिक्खावाला,

मुँहसे झाग, स्वेद तनसे,
ठोकर आ आकर गिरता जाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

जिसके बच्चे दूध दूध रट बारी बारी स्वर्ग सिधारे,
फटे चीथड़ोंमें लिपटी बैठी जिसकी रानी मनमारे,

छातीपर पत्थर धर पापी
पेट लिये जब मिडको जाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

अससे भी भीषण जब मानव व्याकुल भूख भूख चिल्लाता,
अपने ही बच्चोंकी रोटी छीन अदरकी ज्वाल बुझाता,

बच्चा बेबस रोता रहता,
भूखा तड़प तड़प मर जाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

हो अुठती है घृणा, देखता जब अुसके कुत्सित बानेको,
हाथ पैर गल गये, चाटते धून पीव मिश्रित छानेको,
लोग फेर लेते मुख जब,
घिवियाकर वह निज कर फैलाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

अपने ही भाभी जिसको नित थू थू कहकर दूर हटाते,
नर-पशु जिसे समझ कुत्ते भी भोंक भोंककर दूर भगाते,
तिरस्कार अपमान घृणा सब,
सह वह फिर भी जीता जाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

अद्वैतकी आह

अेक दिन हम किसीके लाल थे, आँझके तारे किसीके थे कभी ।
बूँद-भर गिरता पसीना देखकर, था बहा देता घड़ों लोहू कोभी ॥
देवता देवी अनेको पूजकर, निर्जला रहकर कभी अेकादशा ।
तीर्थोंमें जा दूविजोंको दान दे, गर्भमें पाया हमें माँने कहीं ॥

जन्मकै दिन फूलकी थाली बजी । दुःखकी रातें कटीं सुख दिन हुआ ।
 प्यारसे मुझड़ा हमारा चूमकर । स्वर्ग-सुख पाने लगे माता-पिता ॥
 हाथ ! हमने भी कुलीनोंकी तरह । जन्म पाया प्यारसे पाले गये ।
 जी बचे फूले फूल तब क्या हुआ । कीटसे भी नीचतर माने गये ॥
 जन्म पाया पूत हिन्दुस्तानमें । अन्न छाया औ यहींका जल पिया ।
 धर्म हिन्दूका हमें अभिमान है । नित्य लेते नाम हैं भगवानका ॥
 पर अजब अस लोकका व्यवहार है । न्याय है संसारसे जाता रहा ।
 श्वान छूना भी जिन्हें स्वीकार है । है अन्हें भी हम अभागोंसे घृणा ॥
 जिस गलीसे अुच्च कुलवाले चलें । उस तरफ चलना हमारा दण्ड्य है ।
 धर्म-ग्रंथोंकी व्यवस्था है यही ! या किसी कुलवानका पाछण्ड है !
 छोड़कर प्यारै पुगने - धर्मको, आज औसाही-मुसलमाँ हम बने,
 नाथ ! कैसा यह निराळा न्याय है, तो हमें सानन्द सब छूने लगे ॥
 हम अछूतोंसे बताते छूत हैं । कर्म कोअी छुद करें, पर पूत हैं ।
 हैं सगोंको ये पराये मानते । क्या यही स्वामी तुम्हारै दूत हैं ?
 शासकोंसे माँगते अधिकार हैं । पर नहीं अन्याय अपना छोड़ते ।
 प्यारका नाता पुराना तोड़कर । हैं नया नाता निराळा जोड़ते ॥
 नाथ तुमने ही हमें पैदा किया । रक्त मज्जा मांस भी तुमने दिया ।
 ज्ञान दे मानव बनाया फिर भला । क्यों हमें ऐसा अपावन कर दिया ?
 जो दया नेधि कुछ तुम्हें आये दया । तो अछूतोंकी अुमड़ती आहका ।
 यह असर होवे कि हिन्दुस्तानमें । पाँव जम जावे परस्पर प्यारका ॥

प्यारा है नाम तेरा

औ दो जहाँके वाली

औ गुलशनोके माली

हर चीज़से है ज़ाहिर हिकमत तेरी निगली

तेरे ही फ़ैज़से है सरसब्ज़ डाली डाली

फ़त्तोंमें तेरी रंगत फूलोंमें तेरी लाली

यह सिलसिला जहाँका

दुनियाके गुलसितांका

फूलों भरी ज़मींका तारोंका आस्माँका

साग है काम तेरा

प्यारा है नाम तेरा

तूने हमें बनाया

और सोचना सिखाया

हर शैमें हमने देखा तेरे करमका साया

जिस रास्तेमें ढूँढ़ा तेरा निशान पाया

अलिक है तू भुदाया मालिक है तू भुदाया

अंसान भी हैं तेरे

दिवान भी हैं तेरे

जाँदार भी हैं तेरे बेजान भी हैं तेरे

हर अिक गुलाम तेरा

प्यारा है नाम तेरा

माया ढलता साया

माया ढलता साया

मूरख

माया ढलता साया

कल मेरी थी आज तुम्हारी, परसों और किसीकी बारी,
अस मायाका मान न करना, आप अपना नुकसान न करना,
भेद किसीने न इसका पाया

माया ढलता साया

मूरख

माया ढलता साया

आँखें जिनकी मयझाने थीं, नज़रें जिनकी पैमाने थीं,
कुँवारी कलियोंके बिस्तर थे, सोनेकी आँटोंके घर थे,
मिल गयी धाकमें माया,

माया ढलता साया

मूरख

माया ढलता साया

जरकी धरावूँ सँघते थे जो, फोलके आँखें अँघते थे जो,
पाँवोंमें फूल मसलते थे जो, अँचे होकर चलते थे जो,
दौलतने अूनको भी मिटाया

माया ढलता साया

मूरख

माया ढलता साया



रामकी याद

कहाँ हो ऐ हमारे राम प्यारे ?

किधर तुम छोड़कर मुझको सिधारे ॥

बुढ़ापेमें यह दुःख भी देजना था ।

अिसीके देजनेको मैं बचा था ॥

छिपायी है कहाँ वह प्यारी मूरत ।

दिआ दो साँवली-सी अपनी सूरत ॥

छिपे हो कौन-से पर्देमें बेटा ।

निकल आओ कि अब मरता है बुड्ढा ॥

बुढ़ापेपर करम जो मेरे करते ।

तो बनकी सिम्त क्यों तुम पाँव धरते ॥

किधर वह बन है जिसमें राम प्यारा ।

अयोध्या छोड़कर सूनी, सिधारा ॥

कहेंगे क्या जनक यह हाल सुनकर ।

कहाँ सीता कहाँ वह बनके कंकर ॥

गया लछमन भी उनके साथ ही साथ ।

तड़पता रह गया मल मलके में हाथ ॥

मिरी आँधोंकी वह पुतली कहाँ है ।

बुढ़ापेकी मिरी लकड़ी कहाँ है ॥

रुहौं ढूँँ मुझे कोअी बतादे,
मिरे बच्चोंको बस मुझसे मिला दे ॥

लगी है आग सीनेमें हमारे ।

बुझा दे कोअी अुनका हाल कहके ॥

नज़र आता है सूना अब ज़माना ।

कहीं भी अब नहीं मेरा ठिकाना ॥

अन्धेरा हो गया घर हाय मेरा ।

हुआ क्या मेरे हाथोंका झिलौना ॥

हमारा बोलता तोता कहाँ है ।

अरे वह राम-सा बेटा कहाँ है ॥

कमर टूटी न अब मैं अुठ सकूँगा ।

अरे बिन रामके कैसे जिअूँगा ॥

कोअी कुछ हाल तो आकर बताता ।

कि किस जंगलमें है वह मेरा जाया ॥

जो डरती देखकर मिट्टीका चीता ।

वह बनमें फिर रही है आज सीता ॥

जो अुतरी थी न सेजोंसे ज़मींपर ।

वह पैदल फिर रही है आज दर दर ॥

न निकली जान अबतक बेहया हूँ ।

भला-मैं राम बिन क्यों जी रहा हूँ ॥

मिरे जीनेका दिन भी हाय बीता ।

कहाँ है राम, लछमन और सीता ॥

दिधा दे अपना मुझड़ा राम प्यारे ॥

न रह जाये हविस जीमें हमारे ॥

छिपा हो आँखसे जब तुम सा बेटा ।

तो मेरी ज़िन्दगी ही का मज़ा क्या ॥

★

प्रेम संगीत

हम दीवानोंकी क्या हस्ती ? हैं आज यहाँ कल वहाँ चले !
मस्तीका आलम साथ चला, हम धूल बुझाते जहाँ चले ।

आये बनकर अल्लास अभी,
आँसू बनकर बह चले अभी ॥

सब कहते ही रह गये, अरे तुम कैसे आये, कहाँ चले ?
किस ओर चले ! यह मत पूछो, चलना है बस बिसलिवे चले
जगसे उसका कुछ लिये चले, जगको अपना कुछ दिये चले ।

दो बात कही, दो बात सुनी,
कुछ हँसे और फिर कुछ रोये ॥

छककर सुझ-दुझके घूँटोंको हम अक भावसे पिये चले ।
हम भिन्नभंगोंकी दुनियामें, स्वच्छन्द लुटाकर प्यार चले ।

हम अक निशानी-सी अरपर, ले असफलताका भार चले ।

हम मान रहित, अपमान रहित,
जी भरकर धुलकर भेल चुके ॥

हम हँसते हँसते आज यहाँ, प्राणोंकी बाज़ी हार चले ।
हम भला बुरा सब भूल चुके, नत मस्तक हो, मुख मोड़ चले ।
अभिशाप अठाकर होठोंपर, वरदान दगोंसे छोड़ चले ।

अब अपना और पराया क्या ?

आबाद रहें रुकनेवाले !

हम स्वयं बँधे थे और स्वयम्, हम अपने बन्धन तोड़ चले !
हम दीवानों की क्या हस्ती ? हैं आज यहाँ कल वहाँ चले !

★★

झूठे जगकी प्रीति

झूठे जगकी झूठी प्रीति ॥

नैन हैं सूने मोहन आजा,
मन मन्दिरमें जोत जगा जा,
निर्भंगको दिरस दिधा जा,
दुनिया कपटिन किसकी मीत-झूठे जगकी झूठी प्रीति ॥

कलजुग बीता करजुग आया,
हर वस्तूने पलटी काया,

हिरदय हिरदय पाप समाया,
 अलटी नगरी अलटी रीति-झूठे जगकी झूठी प्रीति ॥

दुनिया सावन रैनका सपना,
 मोह नगरमें चैनका सपना,
 रूप अनूप है नैनका सपना,

किसकी हार और किसकी जीत-झूठे जगकी झूठी प्रीति ॥

धोखा है संसारमें धोखा,
 नरमें धोखा नारमें धोखा,
 प्रेममें धोखा प्यारमें धोखा,

फीकी तानें बे-रस गीत-झूठे जगकी झूठी प्रीति ॥

★★

सेवा

क्या दुखी, यतीम, क्या बेवा,
 सारे संसारकी करो सेवा ।

जिससे अिज्जत भी हाथ आती है,
 और दौलत भी हात आती है ।

जिदमते धाक से न घबराओ,
 सबको दिन दिन प्रेम दिखलाओ ।

तुम जमानेमें चैन पाओगे,
 ज़िन्दगीके मज़े अठाओगे ।
 आदिमें झल्क जान लेंगे जब,
 अच्छा लड़का तुम्हें कहेंगे सब ।
 दिलमें रखना झयाल दुखियोंका,
 करते रहना हर एककी सेवा ।
 झल्ककी झिदमतें जो करता है,
 उसका दमाअिक ज़माना भरता है ।
 कोने कोनेमें सारे आलममें,
 बजते हैं उसके नामके डंके ।
 धुश बहुत रहता है धुदा उससे,
 दूर करता है दर्द दुख उसके ।
 सब समझते हैं नेक ज़ात उसे,
 सरको उसके कदमपै हैं रखते ।
 कामका कुछ अिबज़ न तुम लेना,
 बल्कि अपनाही माल दे देना ।
 अिससे मिल जायगी तुम्हें जन्नत,
 हाथ आयेगी अिक बड़ी राहत ।
 दिलसे झिदमत करेगा ओ 'कुदसी',
 होगा मझदूम अेक रोज़ वही ।

मीरके शेर

बारे दुनियामें रहो गमजदा या शाद रहो ।
ऐसा कुछ करके चलो यों कि बहुत याद रहो ॥

* * *

ऐ शोरे क्यामत हम सोते ही न रह जायँ ।
अिस राहसे निकले तो हम को भी जगा लेना ॥

* * *

बेधुदी ले गयी कहाँ हमको ।
देरसे अिन्तजार है अपना ॥
जिसको तुम आसमान कहते हो ।
सो दिलोंका गुबार है अपना ॥

* * *

देखा हो कुछ अिस आमदो खुदमें तो मैं कहूँ ।
खुद गुम हुआ तो बातकी तह आप पा गया ॥

* * *

हर जिसके ध्वाहाँ मिले बाज़ारे जहाँमें ।
लेकिन न मिला कोअी ध्खरीदारे मुहब्बत ॥
अिस राज़को राज़ जी ही में तो जी बचे तेरा ।
जिनहार जो करता हो तो अिज़हारै मुहब्बत ॥

* * *

बज़ममें मुँह अुधर करें क्यौंकर ।
और नीची नज़र करें क्यौंकर ॥

यों भी मुश्किल है वों भी मुश्किल है ।
सर झुकाये गुज़र करें क्यों कर ॥

*

*

*

यही जाना कि कुछ न जाना हाय ।
सो भी भिन्न अन्तरमें हुआ मालूम ॥

*

*

*

कहता है कौन 'मीर' कि बेबिधत्तयार रो ।
ऐसा तू रो कि रोने पे तेरी हँसी न हो ॥

*

*

*

मौसिमे अब्र हो सुबू भी हो ।
गुल हो गुलशन हो और तू भी हो ॥
हो जो तेरा सा रंग गुलका हो ।
रीझें हम तब जब वैसी बू भी हो ॥

*

*

*

यारोंकी आहोज़ारी होवे कबूल क्योंकर ।
अनकी ज़बाँमें कुछ है दिलमें है कुछ, दुआ कुछ ॥

*

*

*

दिल जाने है जूँ रोक़ शबनमने कहा गुलसे ।
अब हम तो चले योंसे रह तू जो रहा चाहे ॥

*

*

*

गुलिस्तोंके हैं दोनों पल्ले भरे ।
बहार बिस तरफ़ अउस तरफ़ अब्र है ॥

*

*

*

हाथ रखे हाथपर बैठे हो क्या बेधुनर ।
चलनेको है कारवाँ कुछ तो किया चाहिये ॥

क्यों ?

दुष्ठी हैं तो क्यों आप झुँझला रहे हैं,
कियेका ही तो अपने फल पा रहे हैं ।
कभी अन्तर्कामोंपै भी मन लगाते,
जो अगलोंके गुन रात दिन गा रहे हैं ।
जो अलटी समझ है तो है काम अलटा,
कि वह सीधी बातोंको अलझा रहे हैं ।
नयी अलझनें और पड़ती हैं आकर,
यह क्या गुत्थियाँ आप सुलझा रहे हैं ।
किधर जा रहे हैं, नहीं इसकी सुधबुध,
जो हैं अपनी धुनमें, चले जा रहे हैं ।
नहीं छेड़ लड़कोंका कुछ देस भगती,
यही कबसे हम तुमको समझा रहे हैं ।
जो हो प्यार आपसमें तो भाग जागें,
तुम्हें बात यह गुरकी बतला रहे हैं ।
नहीं साँचको आँच, भूलो न इसको,
वह पछतायेंगे, अब जो अितरा रहे हैं ।

वही बात है साथ ले डूबनेकी,
 जो बहके हुअे हैं वह बहका रहे हैं।
 है अेक आपका और अुसका विधाता
 हरीजनसे क्यों आप कतरा रहे हैं।
 यह क्या भुलटी गंगा बहानेकी सूझी,
 कि भाभीसे भाभी छुटे जा रहे हैं।
 न आना कभी अुनकी बातोंमें देओ,
 जो अनबन यहाँ हममें फैला रहे हैं।
 कड़ा जीको रखना कि विपदाके बादल,
 जहाँ जायँ हम सरपै मँडला रहे हैं।
 न जाने यह चक्कर कहाँ जाके ठहरे,
 अभीसे यह क्यों आप घबरा रहे हैं।
 सुनी अनसुनी कर दें क्या अिससे हमको,
 जो कहना है 'कैफी' कहे जा रहे हैं।

★★

नया संगन

यहाँ मनकी कहनेमें साँसा नहीं है,
 सब अपने हैं कोअी पराया नहीं है।
 तुम्हें धुन है अीश्वरकी, माना, तो फिर क्या,
 ये संसार अीश्वरकी माया नहीं है ?

हे ये देश भक्ती ही श्रीश्वरकी भक्ती,
 जगतका वही क्या विधाता नहीं है ?
 तुम्हारे बहाये नहीं बहती गंगा,
 तुम्हारे सहारे हिमालय नहीं है ।
 नहीं कर्मसे छूट मिलती किसीको,
 तो फिर ये जगत भी तो मिथ्या नहीं है ।
 वो कब पहुँचे उस तक जो ये कह रहे हैं,
 कि ऐसा है वह और ऐसा नहीं है ।
 जो हो मनकी आँखें तो हों उसके दर्शन,
 किसीने अिन आँखोंसे देखा नहीं है ।
 उसीकी दयासे बने काग अपना,
 हमें दूसरेका सहारा नहीं है ।
 वह पापी है जो धर्मसे हिचकिचाये,
 बचन क्या यही कृष्णजीका नहीं है ।
 नहीं धर्म क्या देसकी अपने सेवा,
 अधर ध्यान फिर क्यों तुम्हारा नहीं है ।
 तुम्ही देओ का करवटें ले रहे हो,
 है कुछ ज्ञान संसारका, या नहीं है ।
 बनी है जो गत देसकी देखते हो,
 जतन क्या कोभी तुमको करना नहीं है ।

बने काम क्योंकर कि सारे यहाँ तो,
 हैं कहनेको अिक करनेवाला नहीं है ।
 बुरा है, बुरा जो कहे भाअियोंको,
 ये प्रेम और हितकी तो भाषा नहीं है ।
 सुभाव अितना कड़वा न होगा किसीका,
 कि लड़नेसे छुटे कोअी धन्धा नहीं है ।
 हर अिक धर्ममें हैं, भलाअीकी बातें,
 बुराअी कोअी मी सिखाता नहीं है ।
 अजागर करो गुन जो हैं तुममें अच्छे,
 बुरा है वही तो जो अच्छा नहीं है ।
 नहीं है किसे चाह सुअ भोगनेकी,
 यहाँ कौन-सा है जो दुअिया नहीं है ।
 लहू पानी अेक कर दो तब घर बनेगा,
 ये गुड़ियाका कोअी घरौंदा नहीं है ।
 बनो असके कहते हो जिसको तुम अपना,
 सब अपनेको हैं कोअी अपना नहीं है ।
 जो है जीत मनसे तो है हार मनसे,
 जो मन हार दे वो तो जीता नहीं है ।
 निकम्मा अकारथ है जीवन तुम्हारा,
 जो वो देशके काम आता नहीं है ।

है मिल बैठना भी भला, पर जो पूछो,
 वो मिलना मी क्या, मन जो मिलता नहीं है ।
 है सौ बातकी एक बात इसको सुन लो,
 है सब कुछ तो, पर हममें अका नहीं है ।
 अठो और बिछड़े हुआँको मिला दो,
 कि बढ़कर कोअी इससे सेवा नहीं है ।
 लगन 'राष्ट्रकी' रखो, यह राग छोड़ो,
 है कोअी कि यौँ 'राष्ट्रभाषा' नहीं है ।
 न थी एक क्या कौरो पांडोंकी भाषा,
 कुरूछेतर क्या तुमने देखा नहीं है ।
 दो भाषी थे क्या जो लड़े करबलामें,
 कभी क्या जग अतिहास जाँचा नहीं है ।
 बने कर्म रेखा अपनी बोली लिपी क्यों,
 जो सुलझे हौँ मन कुछ भी झगड़ा नहीं है ।
 जो 'कलचर सभा' अब बनायी गयी है ।
 कोअी काममें उसके दुविधा नहीं है ।
 हैं हिन्दू भी इसमें मुसलमाँ भी इसमें,
 कोअी दूसरा संगम ऐसा नहीं है ।
 मिलो और करो काम **सब इसमें मिलकर,**
कोअी और काम इससे अच्छा नहीं है ।

जो कहता है 'कैफी' अिसे सोचो समझो,

वह अच्छा नहीं है, तो अच्छा नहीं है ।

जंगलके राजा !

जंगलके राजा, सावधान !

ओ मेरे राजा, सावधान !

कुछ अशुभ शकुन हो रहे आज ।

जो दूर शब्द सुन पड़ता है,

वह मेरे जीमें गड़ता है,

रे अिस हलचलपर पड़े गाज ।

ये यात्री या कि किसान नहीं,

अुनकी-सी अिनकी बान नहीं,

चुपके चुपके यह बोल रहे ।

यात्री होते तो गाते तो,

आगी थोड़ी सुलगाते तो.

ये तो कुछ विष-सा बोल रहे ।

वे अेक अेक कर बढ़ते हैं,

लो सब झाड़ोंपर चढ़ते हैं,

राजा ! झाड़ोंपर है मचान ।

जंगलके राजा सावधान !

ओ मेरे राजा, सावधान !

राजा, गुस्सेमें मत आना,

तुम अुन लोगोंतक मत जाना;

वे सब-के-सब हत्यारे हैं ।

वे दूर बैठकर मारेंगे,

तुमसे कैसे वे हारेंगे,

माना, नञ तेज तुम्हारे हैं ।

“ये मुझको छाते नहीं कभी,

फिर क्यों मारेंगे मुझे अभी ?”

तुम नहीं सोच सकते राजा !

तुम बहुत वीर हो, भोले हो,

तुम इसीलिये यह बोले हो,

तुम कहीं सोच सकते राजा !

ये भूछे नहीं पियासे हैं,

वैसे ये अच्छे खासे हैं,

हैं ‘वाह वाह’ की प्यास अिन्हें ।

ये शूर कहे जायेंगे तब,

और कुछके मन मारेंगे तब,

हैं चमड़ेकी अभिलाष अिन्हें,

ये जगके सर्व-श्रेष्ठ प्राणी,
 अिनके दिमाग, अिनके बाणी,
 फिर अनाचार यह मनमाना !

राजा, गुस्सेमें मत आना,
 तुम अून लोगोंतक मत जाना ।

★★

झीनी झीनी बीनी चदरिया

झीनी झीनी बीनी चदरिया ॥

काहे कै ताना, काहे कै भरनी,
 कौन तारसे बीनी चदरिया ॥

बिगला पिंगला ताना भरनी,
 सुषमन तारसे बीनी चदरिया ॥

आठ कँवल दल चरछा डौले,
 पाँच तत्त गुन तीनी चदरिया ॥

सौंआको सियत मास दस लागे,
 ओक ठोकके बीनी चदरिया ॥

सो चादर सुन नर मुनि ओढ़ी,
 ओढ़ि के मैली कीनि चदरिया ॥

दास 'कबीर' जतन से ओढ़ी,
 ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया ॥

★★

मन मस्त हुआ तब

मन मस्त हुआ तब क्यों बोले ॥

हीरा पायो गँठ गठियायो । बार बार बाको क्यों ओले ॥१॥

हलकी थी जब चढ़ी तराजू । पूरी भभी तब क्यों तोले ॥२॥

सुरत कलारी भयी मतवारी । मदवा पी गयी बिन तोले ॥३॥

हंसा पाये मान सरोवर । ताल तलैया क्यों डोले ॥४॥

तेरा साहिव हे घट माँही । बाहर नैना क्यों ओले ॥५॥

कहे 'कबीर' सुनौ भभी साधो । साहिव मिल गये तिल ओले ॥६॥

★★

घूँघटका पट खोल

घूँघटका पट ओल रे तोको पीव मिलेंगे ।

घटघटमें वह साँझी रमता कटुक वचन मत बोले रे ॥

धन जीवनको गरब न कीजे झूठा पचरंग चोल रे ।

सुन्न महलमें दियना बारिले आसनसो मत डोल रे ॥

जोग जुगुतसो रंग-महलमें पिय पायो अनमोल रे ।

कहे 'कबीर' आनन्द भयो है, बाजत अनहद डोल रे ॥

★★

सहज समाधि

साधो सहज समाधि भली ॥

धुरु प्रताप जा दिनसे जागी,

दिन दिन अधिक चली ॥१॥

जहँ जहँ डोकों सो परिकरमा,

जो कुछ करौ सो सेवा ।

जब सोवौ तब करौ दंडवत,

पूजौ और न देवा ॥२॥

कहौ सो नाम सुनौ सो सुमिरन,

छावौ पिवौ सो पूजा ।

गिरिह अजाड़ अक सम लेछौ,

भाव मिटावौ दूजा ॥३॥

आँख न मूँदौ कान न रूँवौ,

तनिक कष्ट नहीं धारौ ।

अले जैन पहिचानौ हँसि हँसि,

सुन्दर रूप निहारौ ॥४॥

सबद निरन्तरसे मन लगा,

मलिन वसना त्यागी ।

भूठत बैठत कबहुँ न छुटे,

ऐसी तारी लागी ॥५॥

कह 'कबीर' कह अनमुनि रहनी,
सो परगट करि गाजी ।

दुख सुखसे कोजी परे परमपद,
तेहि पद रहा समाजी ॥६॥

★★

दोहे

साधू ऐसा चाहिये जैसा सूप सुभाय ।
सार सारको गहि रर्छे धोधा देखि जुड़ाव ॥

* * *

यह तो घर है प्रेमका छाटाका घर नाहि ।
सीस अतारै भुजि धरै तब पैठे घर माहि ॥

* * *

प्रेम न बाड़ी अपुजे प्रेम न हाट बिकाय ।
राजा परजा जेहि रुचै सीस देखि लै जाय ॥

* * *

छिनहि चढ़े छिन अतरै सो तो प्रेम न होय ।
अघट प्रेम पिंजर बसै प्रेम कहावै सोय ॥

अठा बगूला प्रेमको तिनका अड़ा अकास ।

तिनका तिनकासे मिला तिनका तिनके पास ॥

जाको राखै साँझियाँ मारि न सककै कोय ।
बाल न बाँका करि सकै जो जग बैरी होय ॥

* * *

भूला भूला क्या फिरै सिरपर बँध गयी बेल ।
तेरा साँझी तुझमें अ्यों तिल माही तेल ॥

* * *

माछा फेरत जुग भया फिरा न मनका फेर ।
करका मनका डारिकै मनका मनका फेर ॥

* * *

माला तो करमें फिरै जीभ फिरै मुँह माहि ।
मनुवाँ तो दस दिसि फिरै यह तो सुमिरन नाहि ॥

* * *

बुरा जो देखन में चला बुरा न मिलिया कोय ।
जो दिल धोखा आपना मुझ-सा बुरा न कोय ॥

* * *

✓ कबिरा सोझी पीर है जो जानै पर पीर ।
जो पर पीर न जानी सो काफिर बेपीर ॥

★
★★

साधो मनका मान त्यागो

साधो मनका मान त्यागो ।

काम क्रोध संगत दुर्जनकी ताते अहिस भागो ॥

सुख दुख दोनों सम करि जानै और मान अपमाना ।

इर्ष शोकते रहै अतीता तिन जग तत्व पिछाना ॥

अस्तुत निन्दा दोअू त्यागै छोजे पद निरवाना ।
जन नानक यह खेल कठिन है कोअू गुरुमुख जाना ॥

★
★★

काहे रे बन

काहे रे बन ओजन जाओ ।
सर्व निवासी सदा अलेपा, ताही संग समाओ ॥
पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है मुकुर मांहि जस छाओ ।
तैसे ही हरि बैसे निरन्तर घट ही ओजो भाओ ॥
बाहर भीतर अकै जानो यह गुरु ज्ञान बताओ ।
जन नानक बिन आपा चीन्हे, मिटे न भ्रमकी काओ ॥

★
★★

तू दयालु

तू दयालु, दीन हों, तू दानी, हों भिकारी ।
हों प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-पुंज-हारी ॥
नाथ तू अनाथको, अनाथ कौन मो सो ।
मो समान आरत नहिं, आरत हर तो सो ॥
ब्रह्म तू हों जीव, तू ठाकुर हों चेरो ।
तात मात गुरु सखा, तू सब विधि हितु मेरो ॥

तोहिं मोहिं नाते अनेक, मानियै जो भावै ।
ज्यौं त्यों तुलसी कृपालु, चरन-सरन पावै ॥

★
★★

बरसा वर्णन

घन घमंड नभ गरजत घोरा । प्रिया हीन डरपन मन मोरा ॥
दामिनि दमकि रहनी घन माहीं ! अलकै प्रीति जथा थिर नाहीं ॥
बरसहिं जलद् भूमि नियराये । जथा नवहिं बुध विद्या पायै ॥
बुंद अघात सहहिं गिरि कैसे । अलकै बचन संत सहै जैसे ॥
छुद्र नदी भरि चली तोराभी । जस थोरेहु धन अल अतिराभी ॥
भूमि परत मी ढाबर पानी । जिमि जीवहिं माया लपटानी ॥
सिमिटि सीमिटि जल भरहि तलावा । जिमि सदगुण सज्जन पहि आवा ।
सरिता जल जलनिधि महुँ जाभी । होहि अचल जिमि जिव हरि पाभी ॥

दो.—हरित भूमि तृण संकुल, समुझि परहिं नहिं पंथ ।

जिमि पाखंड विवाद तें, गुप्त होहिं सदग्रंथ ॥

दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाभी । बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाभी ॥
नव पल्लव भये विटप अनेका । साधक मन जस मिलै विवेका ॥
आक जवांस पात बिनु भयेअ । जस सुराज अल अद्यम गयेअ ॥
ओजत कतहुँ मिलै नहीं धूरी । करै क्रोध जिमि धर्महि दूरी ॥
सस सम्पन्न सोइ महि कैसी । अपकारी कै संपति जैसी ॥
निसि तम घन अद्योत बिराजा । जनु दंभिन कर मिला समाजा ॥

महावृष्टि चलि फूटि किआरी । जिमि सुतंत्र भये विगरहि नारी ॥
 कृषी निरावहिं चतुर किसाना । जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ॥
 देखिअत चक्रवाक भग नाही । कलिहि पाअि जिमि धर्म पराहीं ॥
 असुर बरषे तृन नहीं जामा । जिमि हरिजन हिय अपज न कामा ॥
 विविध जंतु संकुल महि भ्राजा । प्रजा बाढ़ जिमि पाअि सुराजा ॥
 जहँ जहँ रहे पथिक थकि नाना । जिमि अिन्द्रियगन अपजै ग्याना ॥

दो.—कबहुँ प्रबल चल मारुत, जहँ तहँ मेष बिलाहिं ।
 जिमि कपूतके अपूजै कुल सद्धर्म नसाहिं ॥
 कबहुँ दिवसमहुँ निविड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग ।
 बिनसै अपजै ग्यान जिमि, पाअि कुसंग सुसंग ॥

चुनी हुआ चौपाअियाँ

परहित सरिस धरम नहिं भाओ । पर पीड़ा सम नहिं अधमाओ ॥

* * *

सुमति कुमति सबके अुर बसहीं । नाथ पूरान निगम अस कहहीं ॥

* * *

जहाँ सुमति तहँ संपति **नाना** । जहाँ **कुमति** तहँ विपति निदाना ॥

* * *

धन्य सो भूप नीति जो करओ । धन्य सो द्विज निज धर्म न टरओ ॥

* * *

धन्य घरी सोखि जब सतसंगा । धन्य जन्म हरिभक्त अभंगा ॥

* * *

साधु चरित सुभ सरिस कपासू । निरस विसाद गुनमय फल जासू ॥

* * *

जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । वंदनीय जेहि जग जस पावा ॥

* * *

जेहिके जेहिपर सत्य सनेहू । सो तेहि मिलत न कछु सन्देहू ॥

* * *

परहित बस जिनके मन माँहीं । तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

* * *

रघुकुल रीति सदा चलि आभी । प्राण जाय वरु वचन न जाभी ॥

मो सम कौन कुटिल

मो सम कौन कुटिल भल कामी ।

जिन तनु दियो ताहि बिसरायो, असो निमकहरामी ॥

भरि भरि अदर विषयको धावौ

जैसे सूकर ग्रामी ।

हरिजन छाँड़ हरी बिमुअनको,

निसिदिन करत गुलामी ॥१॥

पापी कौन बड़ौ है मोतें,
 सब पतितनमें नामी ।
 सूर पतितको ठौर कहाँ है,
 सुनिये श्रीपति स्वामी ॥२॥

सबसे अँची....

सबसे अँची प्रेम सगाओ ।
 दुर्योधनको मेवा त्यागो साग विदुर घर पाओ ॥
 जूठे फल सबरीके छाये बहुविधि प्रेम लगाओ ॥
 प्रेमके बस नृप-सेवा कीन्हों आप बने हरि नाओ ॥१॥
 राजसु यज्ञ युधिष्ठिर कीनो तामें जूठ भुठाओ ॥
 प्रेमके बस अर्जुन रथ हाँक्यो भूल गये ठकुराओ ॥२॥
 ऐसी प्रीति बढ़ी वृन्दावन गोपिन नाच नचाओ ॥
 सूर क्रूर अस लायक नाही कहँ लगि करौ बड़ाओ ॥३॥

रहीमके दोहे

कहु रहीम कैसे निमै बेर-केरको संग ।
 वे डोलत **रस आपनै अनके** फाटक अंग ॥
 जो रहीम अत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग ।
 चंदन विष व्यापक नहीं लिपटे रहत भुजंग ॥

साधु सराहे साधुता जती जोधिता जान ।
 रहिमन साँचे सूरको बैरी करत बखान ॥
 रहिमन धागा प्रेमका मत तोड़ो चटकाय ।
 टूटेसे फिर ना मिले, मिले गाँठ पड़ जाय ॥
 प्रीतम-छवि नैनन बसी, पर-छवि कहाँ समाय ।
 भरी सराय रहीम लछि, आप पथिक फिर जाय ॥
 रहिमन अँसुवा नयन ढरि, जिय दुख प्रगट करैअि ।
 जाहि निकारो गेह तें, कस न मेद कहि देअि ॥
 रहिमन निज मनकी व्यथा, मन ही राखौ गोय ।
 सुनि अिठलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय ॥
 रहिमन वे नर मर चुके, जे कहूँ माँगन जाहिं ।
 अुनतें पहले वे मुअे, जिन मुख निकसत 'नाहिं' ॥
 रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून ।
 पानी गये न अूबरे, मोती मानुस चून ॥
 रहिमन निज सम्पति बिना, कोअुन विपति सहाय ।
 बिनु पानी ज्यों जलजको, नहिं रवि सकै बचाय ॥
 अेकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय ।
 रहिमन साँचे मूलको, फूलै-फूलै आघाय ॥
 यह न रहीम सराहिये, देन-लेनकी प्रीत ।
 प्रानन बाजी राखिये, हार होय कै जीत ॥

पायो जी मैंने

पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो ।

वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो ॥१॥

जनम जनमकी पूँजी पाओ, जगमें सभी ओवायो ॥२॥

छरचै न झूटै, वाको चोर न छूटै, दिन दिन बढ़त सवायो ॥३॥

सतकी नाव जेवटिया सतगुरु, भव सागर तर आयो ॥४॥

मीराँके प्रभु गिरिधर नागर, हरछ हरछ जस गाओ ॥५॥

सितारेके शब्दार्थ

ओज

वतन-देश

आह-भुच्छवास

चाट जोड़ता-रास्ता देखता था, प्रतीक्षा करता था ।

आँछें लगी थीं-चाह थीं ।

विरक्त-भुदासीन ।

भुत्थान-भुन्नति, तरक्की ।

व्यस्त-जुटा हुआ, मशगूल ।

सिकंदर-अलेक्जेंडर महान् ।

कोहकन-पहाड़ छोड़ने वाला यानी फरहाद ।

क्रीसस-क्राइस्ट, ओसा मसीह ।

मंसूर-अक सन्त जो अनल इक (अहं-ब्रह्मास्मि) कहता था ।

सोहराब-ओरानका अक प्रसिद्ध पहलवान ।

पील-तन-हाथीके जैसे शरीरवाला, मोटा ।

किश्चियन-ओसाभी ।

प्रतिभा-असाधारण बुद्धि ।

प्रदान-देना ।

इग-आँख ।

बसो हर वक्त तुम दिलमें हमारे

छब-रूप ।

तेवर-दृष्टि ।

प्यासी नदी

जारी-चलती, बहती ।

लहू-धून ।

अिज्जते हिन्दोस्तॉ-हिन्दुस्तानकी लख

भुभरना-पानीसे अपर आना ।

धुश्क-सूझा ।

कार आमद-कामके लायक, उपयोगी

आवे जिन्दगानी-अमृत ।

नादानी-मूर्खता ।

नासबाब-कृतघ्नता ।

आब आब-पानी पानी होना यानी बहुत ही लज्जित होना ।

बाजूये ज़ार-धनकी बाहें यानी धनवानों की बाहें ।

नाझुदाभी-नाव छेना ।

किश्ती-नाव ।

कुर्बानी-बलिदान, त्याग ।

सरसे पानी अँचा होना-समर्थमें न खना ।

सुबहकी आमद

मशरिफ़-पूरव ।

कार व्योहार-काम-काज ।

रफ़्तार-गति, चलना ।

गुफ़्तार-बातचीत ।

चहकार-चहचहाना, चिड़ियोंकी
आवाज़ ।

अजाँ-नमाज़के लिये पुकारनेकी
आवाज़ ।

आमद-आना ।

शमा-दीपक ।

अंजुमन-सभा ।

शबनम-ओस ।

कुलेलें-धुशीमें अछलना कूदना ।

जल्वा-ज्योति ।

काहिली-आलस्य ।

मुअज़्ज़िन-अज़ान देनेवाला ।

क्वाफ़िले-यात्रियोंके दल ।

मंज़िल-यात्रियोंके ठहरनेका स्थान ।

मछेरे-मछली पकड़नेवाले ।

दलिद्दर-दरिद्रता, दलिद्दुर,
(ग्रामीण)

और से-कुशल पूर्वक ।

चूरन

अमल बेद) अक लता, जिसको

अमल बेत) चूरनमें मिलाते हैं ।

पाचक-पचानेवाला ।

पचलोना-पाँच नमकोंवाला ।

अमले-अधिकारी, अफ़सर ।

अकिल अजीरन-बुद्धिभी बड़ी बड़ी
बातें करना ।

श्री कृष्णकी बाल लीला

मधुपुरी-मथुरा नगरी ।

ज़ाहिरमें-प्रकटमें ।

जोति-सरूप-ज्योतिःस्वरूप ।

बजा-अुचित, कायम ।

होली

जी की गौँठ-मनकी कटुता ।

कर्मवीर

बातें बनाना-बहानेवाज़ी करना ।

कौमका हमदर्द

नूअबिन्साँ-मनुष्य जाति ।

अितलाक-लागू होना, अपना ।

तर्जीह-बढ़कर समझना ।

ज़द-हानि, तकलीफ़ ।

हाले ब़द-दुर्दशा ।

अज़ीज़-प्रिय ।

राहते जाँ-प्राणोंके लिये आराम ।

नीरोज-अक थोहार ।

मायये गम-अधिक दुःख ।

सोग-शोक ।

मातम--शोक मनाना ।

जलील-प्रताप युक्त ।

जलील-निम्न, नीचा ।

गर्दिशे अफलाक-आकाशके चक्करका

असर यानी दुःख

आसायश-आराम, चैन ।

छाक-मिट्टी ।

छाक डालना-तिरस्कार करना ।

हम वतन-देशवासी ।

अहके वतन-देशवालोंके ।

छैर-कुशल ।

ब्रह्मू-ब्रह्म समाजी, राजा राम मोहन

रायके मतको माननेवाला ।

आँछोंकी पुतलियाँ-बहुत ही प्रिय ।

मेहनत

अपाते हैं-बिताते हैं, मिटाते हैं ।

ताबोतवाँ-शक्ति और सामर्थ्य ।

जिस्म-शरीर ।

अिबादत-अश्वर प्रार्थना ।

शाहदत-नेक काममें आन देना ।

अपना अपना सहारा

बशर-मनुष्य

आरजी-अस्थायी, थोड़े समयके लिये

आड़े वक्त-दुःखके समय ।

रुबायी

ता ब मक्तदूर-यथा सम्भव, जहाँतक
हो सके ।

बारे-अकवार, अक ।

मक्तबूल-प्रिय ।

अिरशाद-आज्ञा ।

हमारा झंडा

दरांते-मस्तीके साथ अँठते हुये ।

लश्कर-सैन्य ।

मेरे वतनको तूने जन्नत बना

दिया है

शुक्र-कृतशत ।

जन्नत-स्वर्ग ।

अता-देन ।

हम दोश आस्माँ-आसमानकी बराबर ।

राहत-आराम, चैन ।

ध्वाके हिन्द

अजमत-महानता ।
 गुमों-सन्देह, ध्याल ।
 फेजै कुदरत-अश्वरी देन ।
 रवों-प्रवाहित ।
 जवी-ललाट ।
 हुस्ने अजल-शास्वत सौन्दर्य ।
 अयों-प्रगट, स्पष्ट ।
 जेवोजीनत-शोभा शृंगार ।
 ओज-अुच्चता ।
 अिज्जोशों-गौरव बड़प्पन ।
 धुरशीद पुर जया-चमकता हुआ सूर्य ।
 वादिये कोहन-पुरानी बस्ती ।
 सरमद-अेक संत
 सदक्का-न्योछावर
 बाम-प्याला ।
 अुलकत-प्रेम ।
 बख्शा-प्रदान किया ।
 अंजुमन-सभा ।
 राना-राणा प्रताप ।
 निहाँ-छिपे हुये ।
 शोकस-गौरव ।
 साअूस-मोर ।
 नूये शीर-दूध
 नूर-न्योति ।

सहेर-सुचह ।

रदक-अीर्षा ।

मह-सूरज ।

बर्ग-पत्ता ।

गदोंगुवार-धूल मिट्टी ।

झिलअत-मूल्यवान वस्त्र ।

कौमकी लड़कियोंसे

रविश-चाल चलन ।

ध्राम-कच्चा, टेढ़ा ।

दाश-घन्वा ।

नुमाअिश-प्रदर्शनी ।

रिफार्म (अँग्रेजी)-सुधार ।

बूये वफा-प्रेम-गन्ध ।

गौरते कौमी-जातीय गौरव ।

अुद परस्ती-स्वार्थ परता ।

लकच-अुपाधि ।

अध्रलाक-नैतिकता, आचरण ।

अीमान-विश्वास ।

नकस-चिन्ह ।

जिल्लत-अपमान ।

रुआ-चेहरा, मुँह ।

कारूँ-अेक पौराणिक व्यक्तित्व, जिसको
 सबसे बड़ा धनवान समझा
 गया है ।

बफ़ा-प्रेम ।
 परस्तिश-पूजा ।
 सफ़रीह-मनोरंजन ।
 मरकज़-कैन्द्र ।
 मासूम-अबोध, पाप रहित ।
 मकतब-पाठशाला ।
 जानू-जंघा ।
 नग़मा-गीत ।
 नग़मये क़ौम-राष्ट्रीय गीत ।
 परवरिश-पालन पोषण ।
 ज़ाफ़ीफ़-वृद्ध ।
 तासीर-प्रभाव ।
 फ़साना-कहानी ।

वतन

अंजुमन-संस्था, सभा ।
 अलक़त-प्रेम ।
 आलम-दशा, अवस्था ।

मज़दूर

कार-घन ।
 जाह-अिज़्ज़त, प्रतिष्ठा ।
 हश्म-वैभव ।
 छाल-अेक क़्रीमती पत्थर ।
 गोहर-मोती ।

अलम-झंडा ।
 शोरिश-दंगा, अलबली ।
 हश्रबपा होना-कुहराम मचना ।
 गुलज़ार-बाटिका ।
 मुसरत-आनंद, धुशी ।
 अंजाम-अंत, परिणाम ।

रोटीके मतवाले

साक़ी-शराब पिलानेवाला ।

धूब बरस लो

जलधर-बादल ।
 कौन नये अंकुर उपजाते-भावार्थ-
 कौनसी आशा पैदा होने
 वाली है ।

जय बोलो भारत माताकी

अदक-आँसू ।
 दामन-पल्ला, आँचल ।
 मातम-शोक मनाना ।
 शाह-बादशाह ।
 रंग जमाना-प्रभाव जमाना ।
 धाक छानना-बहुत तलाश करना ।
 धम-धुकना, टेढ़ा ।

झाँसीकी रानी

भृकुटी-तेवर, भौ ।
 फिरंगी-अंग्रेज़ ।

झिलवार-छेल ।

आराध्य-पूज्य ।

मुदित-अश ।

वेज्जार-दुहित ।

सरे आम-धुल्लम धुल्ला ।

आहत-घायल, चोट छाया हुआ ।

जुर्म-अपराध ।

कुर्बानी-बलिदान ।

असमान-जो समान न हो ।

मुंह की धाना-वे अिञ्जत होना, हारना ।

कृतज्ञ-अहसानमंद ।

बरधा

तौर-ढंग ।

दुहायी फिरना-जोर शोर होना, डंका
बजना ।

धुंदायी फिरना-लोगों का झिलाफ़
होना ।

अन्न-बादल ।

रिसाले-फ़ौज के दल ।

अर्ध-आकाश ।

मुहिम-लड़ायी, फ़ौज की चढ़ायी ।

बेड़ा डुबोना-सर्वनाश करना ।

कौंदना-बिजली का चमकना ।

नक्काब-घूँघट ।

तह करना-लपेटना ।

गुस्ले सेहत-स्वास्थ्य-स्नान ।

झिलबत-बादशाहों द्वारा किसीकी
अिनाममें दिये ज नेवाले
वस्त्र ।

कोह-पहाड़ ।

दस्त-जंगल ।

मामूर-भरा हुआ ।

बटिशा-बाट, राह ।

नमूदार-दिखायी पड़ना ।

रहवार-तेज चलनेवाला घोड़ा ।

संग-पत्थर ।

शजर-पेड़ ।

वर्दी-पोशाक ।

लाजवर्दी-नीले रंगकी ।

पटे होना-भरे होना ।

कुहसार-पहाड़ ।

अशजार-'शजर' का बहुवचन ।

सू-तरफ़ ।

ता-जिससे ।

जमादात-पत्थर जैसी चीज़ें ।

सिसकना-चुपके चुपके रोना ।

मझफी-छिपी हुआ ।

अुगलना-बाहर निकालना ।

अम्बार-अँचे ढेर ।

बीर बहोटी—मखमल जैसा ओक लाल आलम सोज़—दुनियाको जला डालने
रंगका कीड़ा जो बरसातके वाली ।

दिनोंमें दिआभी देता है । परवाना—गतिगा ।

गुलनार—फूलोंसे भरा हुआ । अरमान—अच्छा, अभिलाषा ।

औपाँ—होश-हवास । ज्ञात—व्यक्तित्व ।

वेड़ा—नावों या जहाज़ोंका झुंड । बदज़न—बुरा अयाल होना ।

रौ—प्रवाह, बहाव । ताभूस—मोर ।

धुसरोकी पहेलियाँ

वाके—अुसकें । जिश्त—अ़राब, कुरूप ।

वाकी—अुसकी । पायेजिश्त—कुरूप पैर ।

रहवत—रहता है । करनुल—शैतों—सींगवाला शैतान ।

वाने—अुसने । यारा—अुपाय ।

वासे—अुससे । फिर जाना—विरुद्ध हो जाना ।

निकसत—निकलते हैं । सिछा—बदला, अिनाम ।

हालीके शेर

तसव्वुर—ध्यान, अ़याल । ममनून—आभारी ।

लगाव—प्रेम । बुत परस्त—मूर्ति-पूजक ।

लाग—साधारण सम्बंध, ममता । कहीं सिवा—बढ़कर ।

अुल्फ़त—प्रेम । मुराद—कामना ।

तर्क—त्याग । गो—यद्यपि ।

शमा—मोमबत्ती, दापक । हाजत—आवश्यकता ।

बर्क—बिजली । कुसूर—कमी ।

रोज़े फ़िज़ू—दिन दिन बढ़नेवाला ।

बन्दअे गरज—स्वार्थका दास, स्वार्थी ।

राज़ी—अ़श ।

रज़ा—मन्शा (अीश्वरी अच्छा) ।

चन्दगी—भीखरोपासना ।

सदाकृत—सच्चायी ।

नेटिव—आदिवासी ।

बुकरात—यूनान-ग्रीस देशका एक
दार्शनिक ।

दाना—बुद्धिमान

अफ़आल—कृत्य ।

मुज़िर—हानिकारक ।

अहल—वाले ।

शैरत—लाज, शरम ।

ज़िल्लत—अपमान, बेअिज़्ज़ती ।

मज़मून तरासना—(व्यंग्य) लेख लिखना

फ़लक—आकाश ।

दहर—दुनिया, ज़माना ।

हे मातृभूमि

रज—धूल ।

परमहंस—ऐसा शानी जिसे अमेद दृष्टि
हो गयी हो ।

प्रत्युत्कार—अपकारका बदला ।

सुजस वारि—सुयश जल, कीर्ति का पानी ।

सारे जहाँसे अच्छा

शुभवत—परदेश ।

हमसाया—पड़ोसी ।

पासवाँ—चोकीदार ।

रश्के जिनॉं—जिससे स्वर्ग भी आर्ष्या
करे । बहुत ही सुंदर ।

आबरूदे गंगा—गंगा नदीका प्रवाह ।

कारवाँ—भूटवाले यात्रियोंका हुँड ।

दौरे ज़माँ—कालचक्र ।

महरम—ऐसा साथी जिससे मनकी
बात कही जाती है ।

ददें निहाँ—गुप्त पीड़ा ।

कौमी गीत

आन—कषण ।

धार—काँटा ।

शक्रक—अुषा ।

ज़र्ग—अणु, परमाणु ।

नया शिवाला

सनमकदा—मंदिर ।

जदल—लड़ाई झगड़ा ।

वाअेज़—धर्मोपदेशक ।

दैर—मंदिर ।

हरम—मस्जिद, काबा ।

वाज़—धर्मोपदेश ।

फ़साना—कहानी ।

शैरीयत—परायापन ।

नक्रशे दुःखी-द्वैत-चिह्न ।
 दामान-दामनका बहुवचन ।
 मय-शराव ।
 पीत-प्रीति

कुछ शेर

तहजीब-संस्कृति ।
 आशियाना-घोंसला ।
 अज़ल-आदि, मूल ।
 सधुन-काव्य, बोल, वचन ।
 चटक-कलीके झिलते समय होनेवाली
 आवाज़ ।

कसक-पीड़ा ।
 कसरत-बहुत ।
 वहदत-अकत्व ।
 राज-रहस्य ।
 नादों-बेसमझ, नादान ।

स्वयमागत

स्वयमागत-छुद-ब-छुद आया हुआ ।
 दैन्य-दीनता ।
 दूषण-दोष, बुराधियों ।
 विभूषण-गहना ।
 पूषण-सूरज ।
 आकर्षण-छिंचाव ।

घन-अधिक ।
 संघर्षण-रगड़ झगड़, स्पर्धा ।
 दुर्घर-प्रबल ।
 विभव-अैश्वर्य ।

हिन्दु-मुसलमाँ

आनवान-सजघज, शोभा ।
 मिसरा-अुर्दू कविताका एक चरण ।

ग़ालिबके शेर

हविस-तृष्णा, चाह ।
 निशाते कार-कामकी धुशी ।
 अिशरत-आनंद ।
 कतरा-बूँद ।
 धूगर-भादी ।
 रौनक-कान्ति ।
 मआल-परिणाम, अंत ।

चरआ गीत

पुतली घर-कारखाना, मिला ।

आदी गीत

विपन्न-दुःखी ।
 अत्तप्त-संतप्त, धूब सपा हुआ ।
 असास-अुच्छवास ।
 दग्ध-जला हुआ ।

छंग-तलवार ।

संजीवन-जीवनदायी शक्ति ।

मातृभूमिके सैनिक

छोड़-ममता ।

बेटीकी विदा

नेक-ज़रा भी ।

चिरवा-पौधा ।

अनुरागे-प्रेम भरे ।

निपट-अकदम, बिलकुल ।

रीता-धाली ।

दशहरा

ललाम-सुन्दर ।

छंजन-अक पक्षी ।

चकवा-अक पक्षी ।

मग-गारता

पत्र-पन्ने, पृष्ठ

अत्र-यहाँ ।

हन्त-हाय, अफ़सोस ।

गिरजाके घंटेकी टन् टन्

पाबंद-नियमित ।

निरभ्र-बिना बादलका, स्वच्छ ।

यह किसका कंकाल

पीब-पीप ।

चिर-बहुत समय ।

प्रतिशोधी-बदला लेनेवाला ।

जौकके शेर

सफ़ा-पाक ।

सफ़े हस्ती करना-अपनेको मिटाना ।

वस्ल-मिलन ।

दार-फाँसीका तछता ।

तिफल-बालक ।

कोदन-नादान, स्कूलका

रिन्द-मस्त ।

बशर-मनुष्य ।

शर-दुष्टता, बुराभी ।

अमीमानकी कहेंगे-सच कहेंगे ।

शफलत शआरी-असावधानपना ।

दी-दीन, धर्म ।

तहोवाला-नीचा अँचा ।

बेक्रारी-बेचैनी ।

गर्दू-आकाश ।

ज़ेर-नीचे ।

अलम-दुःख ।

बसन्त

मज़र-दृश्य ।
 धानी-धानके रंगकी ।
 शै-चीज़ ।
 अफ़ज़ा-बढ़ानेवाला ।

हवा चली

बाली-गेहूँ, धानकी बाल ।
 शिगूफ़ा-कंली ।

हाथ नहीं यह देखा जाता

निर्मम-ममता हीन, निर्दय ।
 बाना-ढंग, पोशाख ।
 धिधियाना-गिड़गिड़ाना ।

अछूतकी आह

द्विज-ब्राह्मण ।
 फूल-कौंसा (अक धातु)
 अपावन-नापाक, अशुद्ध ।

प्यारा है नाम तेरा

कैज़-दान, उपकार ।
 धालिक-सृष्टा, पैदा करनेवाला ।
 हैवान-पशु ।

रामकी याद

सिम्त-दिशा, तरफ़ ।
 औँछोंकी पुतली-बहुत ही प्रिय ।
 हविस-चाह, भिच्छा ।

प्रेम संगीत

हस्ती-अस्तित्व ।
 अभिशाप-शाप, बददुआ ।
 अभिशाप अुठान-शाप देना शुरू करना ।

झूठे जगकी प्रीति

करजुग-पाछंड युग, कलियुग ।

सेवा

दम भरना-भरोसेके साथ बढ़ावी करना ।
 अेवज़-बदला ।
 मझदूम-मालिक, स्वामी ।

मीरके शेर

बार-द्वार ।
 ग़मज़दा-दुखी, अप्रसन्न ।
 शाद-शुश, प्रसन्न ।

धोर-कोलाइल ।
 बेधदी-वेहोशी ।
 गुवार-धूल, रंज ।
 आमदोशुद-आवागमन ।
 राज-रहस्य, भेद, मर्म ।
 जिनहार-कभी ।
 अजहार-जाहिर करना ।
 बज्म-सभा, जल्सा ।
 आहोज़ारी-रोना पीटना ।
 शवनम-ओस ।

क्यों

गुर-भेदकी बात ।
 कतराना-किसीसे बचनेके लिये ।
 रास्ता छोड़कर चलना ।

नया संगम

मुजागर-प्रसिद्ध ।
 बरौदा-मिट्टीका घर ।

जंगलके राजा

गाज-विजली गिरनेकी आवाज़,
 वज्रपातध्वनि ।
 गाज पड़ना-आफ़त आना ।

झीनी....चदरिया

अंगला, पिंगला, सुषम्ना- योगके
 अनुसार शरीरकी तीन
 नाड़ियाँ ।

मन मस्त....

सुरत-ध्यान, स्मृति ।
 कलारी-कलवारी, शराब बेचनेवाली ।
 ताल-तालाब ।
 तलैया-छोटा तालाब ।
 ओले-ओट, आड़ । (तिल ओट पहाड़,
 कहावतसे सम्बंधित ।)

घूँघटका पट, धोल

तोको-तुमको ।
 पीव-मालिक, स्वामी, परमात्मा ।
 चोल-कुरता, शरीर ।
 मुन्न-मुना ।
 दियना-दीपक, बत्ती ।
 बारि ले-जला ले ।
 जोग-योग ।
 जुगुत-युक्ति ।

सहज समाधि

जा-जिस ।
 गिरिह-गृह, घर ।

कनिक-जरा, थोड़ा ।

तारी लगी-लगन लगी, धुन लगी ।

दोहे

सुभाय-स्वभाव, आदत ।

धाला-मौसी, माँ की बहन ।

मनका मनका फेर-दिलकी माला जप,

यानी दिलको ध्यानमें लगा ।

सुमिरन-ध्यान, जप ।

पीर-गुरु, साधु ।

पर पीर-दूसरेका दुःख ।

साधो, मनका मान त्यागो

ताते-अससे ।

अहनिश-अहर्निश, दिन-रात ।

काहे रे बन

अलेपा-निर्लिप्त ।

सुकुर-आशिना ।

आपा-स्व, आत्मा ।

काशी-वह मैल जो किसी जगह पानी

के लगातार जमे रहनेसे पैदा

होती है ।

तू दयालु

हौं-म ।

मोखो-मेरे समान ।

आरत-दुष्ठी ।

हितु-हितैषी ।

बरसा वर्गन

दामिनि-बिजली ।

नियराये-नज़रीक आकर ।

नवहिं-झुकते हैं, नम्र बनते हैं ।

तोराभी-बाँध तोड़कर ।

ढावर-गदला, मिट्टी मिला हुआ ।

हरित-हरा ।

संकुल-ढंकी हुआ ।

बटु-विद्यार्थी ।

बिटप-पेड़ ।

सस-शय, धान ।

अद्योत-जुगनू ।

दंभिनकर-दंभियोंका ।

निरवहिं-अनाजके पौधोंके बीचकी

घास साक करना ।

असर-मरुभूमि, रेगिस्तान ।

भ्राजा-शोभित होना, सुंदर लगना ।

बिलाहिं-लुप्त होना, लपता होना ।

पतंग-सूर्य ।

बिनसै-नाश होना, बरबाद होना ।

चुनी हुआ चौपायियाँ

अधमाभी-नीचता ।

मो सम कौन कुटिल

सूकर—सुअर ।

ठौर—जगह, शरण, पनाह ।

रहीमके दोहे

भुजंग—साँप ।

बोझिता—योगी पन ।

गोय—छिपाकर, दबाकर ।

पानी—प्रतिष्ठा, अिज्जत ।

अबैर—बचना, अपर अठना, अद्वार
पाना ।

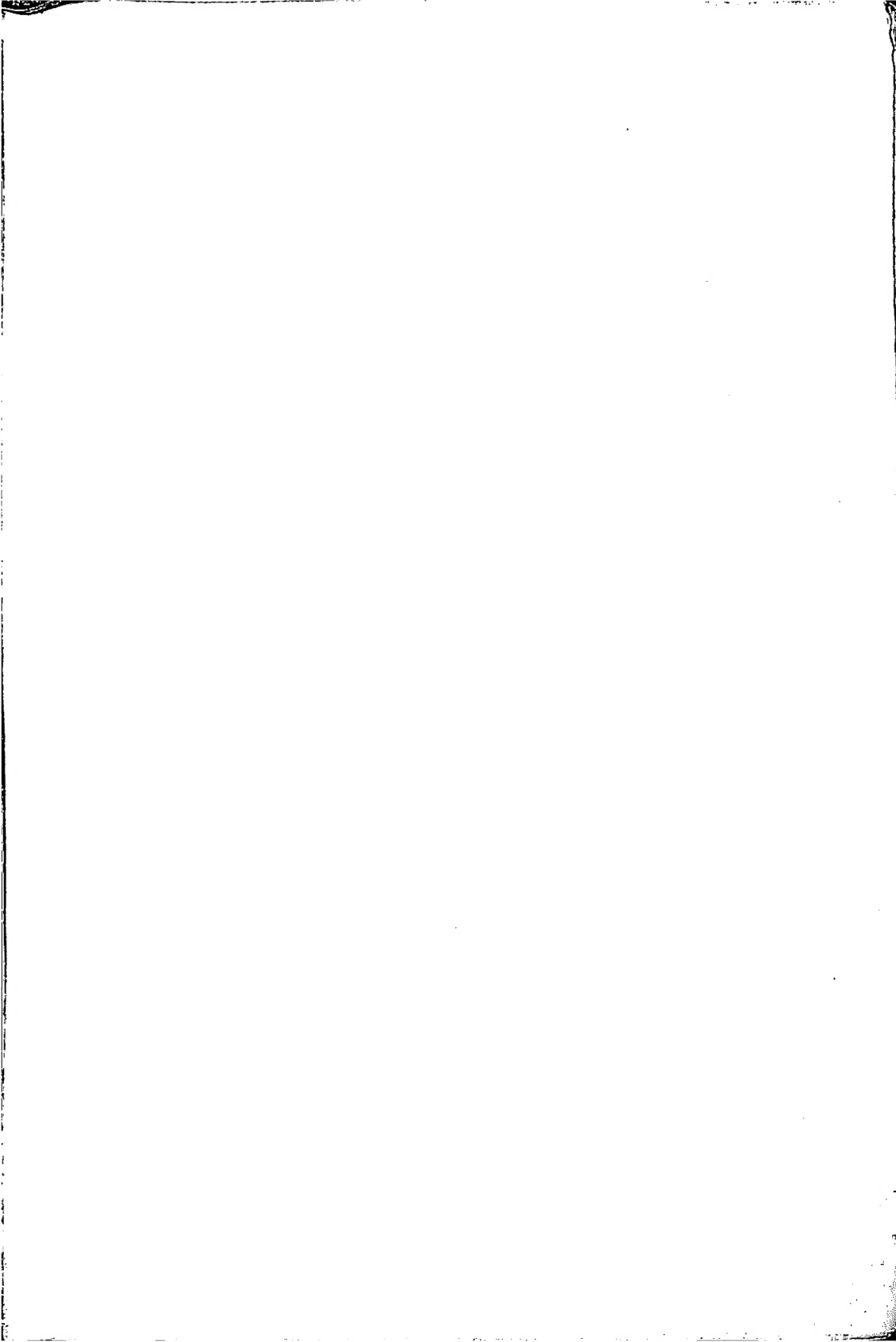
कै—या, तो, कि ।

पायो जी मैंने

अमोलक—अमूल्य, वेशकीमती ।

अटै—अतम होती, कम होती ।

अैवटिया—नाविक, अेवनहार ।



हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्षा के प्रकाशन

रु. आ. पा.

०— ४—०

१. हिन्दुस्तानी बालपोथी—१ (नागरी-अर्द्ध)	०— ४—०
२. " शब्दार्थ—गुजराती, मराठी, असमीया बँगला, पंजाबी, कन्नड़, सिंधी, नेपाली, तेलुगु हरभेकका	०— ०—६
३. हिन्दुस्तानी बालपोथी—२ (नागरी-अर्द्ध)	०—१२—०
४. " गुजराती समज	०— २—०
५. " मराठी "	०— ३—०
६. " कन्नड़ "	०— ५—०
७. हिन्दुस्तानी छोटी कहानियाँ (नागरी-अर्द्ध)	०— ६—०
८. फुलवारी (गद्य-पद्य संग्रह) नागरी	०—१२—०
९. " " अर्द्ध	१— ०—०
१०. हिन्दुस्तानी कहानियाँ—१ नागरी	०— ७—०
११. " " अर्द्ध	०— ७—०
१२. दो आम (नाटिका) नागरी	०— ६—०
१३. " अर्द्ध	०— ६—०
१४. हिन्दुस्तानी कहानियाँ—२ नागरी	०—१४—०
१५. सितारै (पद्य संग्रह) नागरी	१— ०—०
१६. " " अर्द्ध	१— ८—०
१७. हिन्दुस्तानीके प्रचारक गांधीजी	०— ४—०
१८. हिन्दुस्तानीकी नीति	०— १—०
१९. हिन्दुस्तानी मुहावरा कोश	१— ८—०
२०. प्राचीन कविता संग्रह	१— ८—०
२१. व्याकरणके पारिभाषिक शब्द	०— ३—०
२२. नागरी वर्ण-लिपि-बोध	०— ६—०
२३. हिन्दुस्तानी प्रचार क्यों ?	०—१२—०
२४. हिन्दुके विधानकी अंग्रेजी-हिन्दुस्तानी शब्दावली	२— ०—०
२५. मंगल प्रभात (मासिक पत्रिका) सालाना चंदा	३— ०—०

छापनेवाला : अ. टा. नाणावटी, हिन्दुस्तानी छापघर, काकावाडी, वर्षा

